दशलक्षण

विधान

आशीर्वाद
गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन
प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

श्री दशलक्षण विधान का मांडला

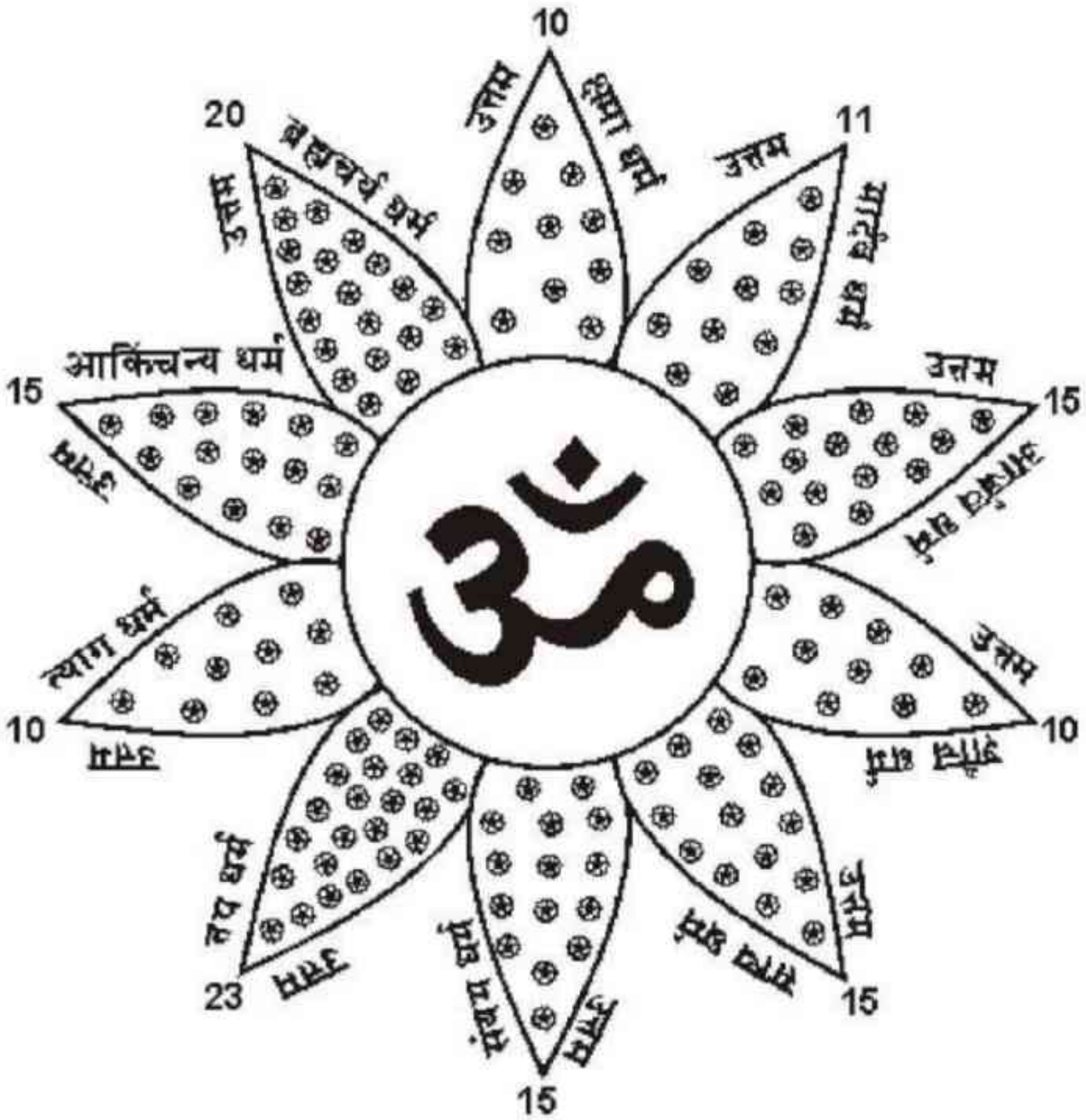

दशलक्षण व्रत, कब, क्यों, कैसे ?

दोहा- दशलक्षण जिन धर्म की, महिमा अपरम्पार।
ऐसे शाश्वत धर्म को, वंदन बारम्बार॥
आदि शांति जिन पार्श्व को, सदा नमाऊँ माथ।
जिनवाणी गण ईश को, जोडू दोनों हाथ॥

हमारे आचार्यों ने अनेक पर्व बताये हैं। कोई धार्मिक पर्व है, कोई शाश्वत पर्व है, कोई राष्ट्रीय पर्व है, कोई सामाजिक पर्व है। हर पर्व कुछ न कुछ संदेश लाता है, कुछ सिखाता है। उत्साह व आनंद का वातावरण बनाता है। पर्व मनुष्य को आपस में जोड़ते हैं, आनंद का अनुभव कराते हैं। त्याग, शांति का उपदेश देते हैं। कुछ पर्व कर्मों से मुक्त होने का मार्ग दिखाते हैं। वे पर्व हैं। शाश्वत दशलक्षण पर्व, सोलहकारण पर्व, नंदीश्वर पर्व, अष्टाह्निका पर्व आदि। ये सभी पर्व वर्ष में तीन बार आते हैं। मन में भक्ति का नया जोश भर जाते हैं। हमारे धर्म में वैसे तो सभी पर्वों का अपना-अपना महत्त्व है फिर भी सबसे अधिक भाद्रमास में आने वाले दशलक्षण पर्व को सभी लोग श्रद्धा भक्ति के साथ मनाते हैं। पूजा, पाठ, व्रत, उपवास आदि करके आत्मिक शांति का आनंद प्राप्त करते हैं।

12 महीनों में सर्वश्रेष्ठ महीना भाद्रमास माना जाता है। भाद्रमास शब्द ही भद्रता को दर्शाता है। भद्र बनाता है, सरल बनाता है, पापों से छुड़ाता है। लोग व्यापार आदि को बंद करके तीर्थों पे जाकर साधु-संतों के सान्निध्य में दशलक्षण पर्व को विशेष रूप से मनाते हैं। गुरुवाणी में दशलक्षण पर्व किस प्रकार प्रारम्भ होता है वह सब सुना है। वैसे यह शाश्वत पर्व है जब षट्काल परिवर्तन होते हैं तब सृष्टि बदलती है। छठे काल का अंत हो जाता है तब यहाँ पर सात-सात दिन तक कुवृष्टियाँ होती है जो सृष्टि को समाप्त कर देती है, नष्ट कर देती है। सात दिन तक

अग्नि की वर्षा, सात दिन तक शीतल जल की वर्षा, सात दिन तक खारे पानी की वर्षा, सात दिन तक धुए की वर्षा, सात दिन तक धूलि की वर्षा, सात दिन तक विष की वर्षा, सात दिन तक धूम की वर्षा; इस प्रकार उनचास दिन तक ऐसी कुवृष्टि होगी। काल गणना के अनुसार छठे काल का अंत हमेशा आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को होता है। नये युग का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा (एकम्) को होता है। कुवृष्टियाँ ज्येष्ठ कृष्णा 11 से आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा तक होती है। यहाँ अवसर्पिणी काल समाप्त हो जायेगा। फिर उत्सर्पिणी काल प्रारम्भ होगा इसमें सात-सात दिन तक सुवृष्टि होगी। सुवृष्टि श्रावण कृष्णा एकम से भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी तक होती है। सात-सात दिन तक सुवृष्टि होती है वह इस प्रकार की है-

सात दिन तक क्षीर की वर्षा सात दिन तक अच्छे मीठे जल की वर्षा, सात दिन तक अमृत की वर्षा, सात दिन तक रस की वर्षा, सात दिन तक दिव्य रस की वर्षा, सात दिन तक शीतल गंध की वर्षा, सात दिन तक पुष्कर मेघ की वर्षा होगी जिससे पृथ्वी शांत, शीतल, उर्वरा, उपजाऊँ हो जायेगी।

जब यहाँ पर कुवृष्टि प्रारम्भ होती है तब उससे पूर्व विद्याधर देवगण आदि 72 (बहत्तर) जोड़ों को गंगा-सिंधु नदियों की वेदी में विजयार्ध पर्वत की गुफाओं में सुरक्षित रखेंगे। विद्याधर मनुष्यों को और कुछ तिर्यंचों को सुरक्षित छिपा देते हैं। जब यहाँ सुवृष्टि हो जाती है तब उन सबको भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को लाते हैं और वे मनुष्य उस दिन धर्म से पुनः अपने जीवन की शुरूवात करते हैं। धर्म से सृष्टि का श्री गणेश करते हैं। 10 दिन तक भगवान की विशेष आराधना, साधना करते हैं। व्रत, उपवास करते हैं। तप, त्याग, संयम से जीवन प्रारम्भ करते हैं।

यह दशलक्षण पर्व वर्ष में तीन बार आता है। भाद्रमास में, माघमास में और चैत्रमास में इसका महत्त्व जानकर पूजा-अर्चा करनी चाहिये। जिसने भी श्रद्धा-भक्ति से व्रत को पालन किया है उसने निश्चित रूप से कर्मों का क्षय करके परम सिद्धपद को प्राप्त किया है। दशलक्षण व्रत को चार राजकुमारियों ने धारण किया था। मुनिराज के मुखारविंद से इसका महत्त्व जानकर उन्होंने 10 वर्ष तक 10 दिन के निर्जल उपवास किये, भक्तिभाव से व्रत का पालन किया। इस व्रत के प्रभाव से उन्होंने स्त्रीपर्याय का छेदनकर लिया और देव बनी। वहाँ से च्युत होकर राजकुमार बनकर मुनिपद को धारण किया और कर्म काटकर सिद्धपद को प्राप्त कर लिया।

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार।।7।।

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार।।8।।

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान।।9।।

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म।।10।।

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो।।
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को।।1।।

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।।
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।।2।।

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है।।
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है।।3।।

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है।।
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है।।4।।

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है।।

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मलौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दु:ख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ:–ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।
नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभचारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

दशलक्षण धर्म स्तवन

(तर्ज–जिनशासनी हंसासनी पद्मासनी माता...)

दश धर्म की, जिनधर्म की जय बोलते जाओ।
जिनराज के चरणों में आओ पुष्प चढ़ाओ।।

1. इक वर्ष में दश धर्म तीन बार मनाये।
उसमें भी भाद्रमास हमें भद्र बनाये।।
तुम नम्र बनो सरल बनो पाप नशाओ।
उत्तम क्षमादि धर्म धार सिद्ध कहाओ।। दशधर्म..

2. क्रोधादि ये कषायें हमें भ्रमण कराये।
ये क्रोध मान लोभ आदि धर्म छुड़ाये।।
ये झूठ कपट दुर्गति का पात्र बनाता।
इक सत्य शौच धर्म हमें पूज्य बनाता।। दशधर्म..

3. संयम बिना ये जीव पशु तुल्य कहाये।
तप त्याग से ही चित्त को पवित्र बनाये।।
मूर्छा की भावना ही पाप पंक बढ़ाये।
आरम्भ परिग्रह तजे वो मोक्ष उपाये।। दशधर्म..

4. उत्तम है ब्रह्मचर्य ब्रह्म रूप दिलाये।
सारे व्रतों में मुख्य ब्रह्मचर्य कहाये।।
इन्हीं व्रतों को श्रद्धा से हम पालते जायें।
मुनिराज बने ज्ञान का सुदीप जलायें।। दशधर्म..

दोहा– दश वर्षों तक व्रत करें, दश दश कर उपवास।
मन में हो 'आस्था' सदा, गुप्ति चित्त निवास।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चौबीस भगवान का स्तवन

दोहा

(हर भगवान की स्तुति के साथ पुष्प चढ़ाना है।)

1. ऋषभदेव वृषभेश जिन, आद्य बंधु आदीश।
आदीनाथ पुरुदेव को, सदा झुकाऊँ शीश।।
चौबीसों भगवान का, रात दिवस ले नाम।
पूजन अर्चन जाप से, सिद्ध होय सब काम।।1।।

2. अजितनाथ की जीत ही, सर्व जगत की जीत।
गणधर इन्द्र न गा सके, प्रभुवर के गुण गीत।। चौबीसों...

3. संभव प्रभु के द्वार पे, संभव होवे कार्य।
लगन लगाओ नाथ से, श्रद्धा धर अनिवार्य।। चौबीसों...

4. अभिनन्दन जिनदेव तुम, त्रिभुवन से अभिनंद्य।
हाथों में लेकर सुमन, नमन करें भविवृन्द।। चौबीसों...

5. सुमतिनाथ की अर्चना, दुर्मति दूर भगाय।
सुमति से सुगति मिले, ऐसी मति हो जाय।। चौबीसों...

6. पद्मनाथ को पद्म से, जो पूजे दिन-रात।
पद्मप्रभु की भक्ति से, पायें सुख सौगात।। चौबीसों...

7. श्री सुपार्श्व के पास में, भक्त सदा सुख पाय।
प्रभु के चरण प्रसाद से, सब संकट मिट जाय।। चौबीसों...

8. चंद्रनाथ के चरण में, चंदन नित्य चढ़ाय।
चन्द क्षणों में चन्द्र जिन, रोग शोक विनशाय।। चौबीसों...

9. पुष्पों से कोमल अमल, पुष्पदंत भगवान।
पुष्पहार से अर्चना, करते भक्त महान्।।
चौबीसों भगवान का, रात दिवस ले नाम।
पूजन अर्चन जाप से, सिद्ध होय सब काम।।

10. शीतलनाथ जिनेन्द्र से, मिला धर्म संदेश।
दश धर्मों को धार लो, काँटों कर्म अशेष।। चौबीसों...

11. मेरु पर जिनका हुआ, जन्म समय अभिषेक।
श्रेयनाथ से श्री मिले, चरणों में सर टेक।। चौबीसों...

12. मंगलमूर्ति आपकी, वासुपूज्य भगवान।
सर्व अमंगल दूर हो, करो प्रभु कल्याण।। चौबीसों...

13. विमलनाथ के नाम से, चित्त विमल हो जाय।
कर्म मलों को नाशके, भक्त विमल बन जाय।। चौबीसों...

14. गुण अनंत के ईश हैं, श्री अनंत जगदीश।
त्रिभुवन तिलक स्वरूप जिन, तुम्हें नमायें शीश।। चौबीसों...

15. धर्मतीर्थ में धर्म की, धर्म ध्वजा फहराय।
धर्मनाथ के ध्यान से, धर्म जगत् में छाय।। चौबीसों...

16. कामदेव चक्रीश हो, शांतिनाथ तीर्थेश।
शांतिनाथ शांति करें, शांत दांत परमेश।। चौबीसों...

17. कुंथुनाथ को है नमन, शत-शत बार प्रणाम।
मदन अरि जेता प्रभु, सदा जपें हम नाम।। चौबीसों...

18. छह खंडों को जीतकर, अरहनाथ भगवान।
धन वैभव को छोड़कर, किया आत्म कल्याण।। चौबीसों...

19. मोह मल्ल के क्लेश को, मल्लिनाथ विनशाय।
उन जिनवर की हम सदा, पूजा भक्ति रचाय।।
चौबीसों भगवान का, रात दिवस ले नाम।
पूजन भक्ति जाप से, सिद्ध होय सब काम।।

20. मुनियों के आधार हो, मुनिसुव्रत भगवान।
मुनिसुव्रत के ध्यान से, शीघ्र मिले भगवान।। चौबीसों...

21. नमिनाथ की भक्ति से, पायेंगे सद्ज्ञान।
बोधि समाधि का हमें, देना प्रभुवर दान।। चौबीसों...

22. बालयति हो तीसरे, धारा तुमने योग।
योगी नेमीनाथ सम, पायें हम चिद्योग।। चौबीसों...

23. महामंत्र नवकार से, नागयुगल को तार।
पार्श्वनाथ चिंतामणि, मधुवन के आधार।।चौबीसों...

24. महावीर औ सन्मति, वर्द्धमान अतिवीर।
पाँच नाम प्रभु आपके, सर्वश्रेष्ठ प्रभुवीर।। चौबीसों...

25. प्रभुवर का इक नाम ही, सबमें मंगलकार।
त्रय गुप्ति युत नमन कर, 'आस्था' हो भव पार।। चौबीसों...

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री दशलक्षण धर्म विधान पूजा

(गीता छंद)

ये धर्म दशलक्षण हमारे, भवदधि से तारते।
उत्तम क्षमादिक धर्म को, परिपूर्ण जिनवर धारते॥
हम भी उसे पालन करें, कल्याणकारी पथ चुनें।
आह्वान पुष्पों से करें, हम आप सम निज अघ हनें॥

ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

प्रभु आपके पावन चरण, पावन करें मम चित्त को।
त्रय रोग से हम मुक्त हो, यह भावना मम चित्त हो॥
उत्तम क्षमा मार्दव धरें, और शौच आर्जव सत्य हो।
तप त्याग संयम ब्रह्ममय, मम धर्म आकिंचन्य हो॥1॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य-ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजी सुनों इस भक्त की, चंदन रहे ज्यों चर्ण में।
हम भी चरण में नित नमें, प्रतिपल रहें तुम शर्ण में॥ उत्तम...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा हमारी पूर्ण हो, अरदास प्रभुवर आपसे।
अक्षत चढ़ा अक्षय बनें, माँगें प्रभो बस आपसे॥ उत्तम...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पंचरंगी कमल ये, अर्पित तुम्हारे चरण में।
कामारि शत्रु को हने, हम आ गये प्रभु शरण में॥ उत्तम...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मोह जेता ! क्षुत् विजेता, आपको जग पूजता।
प्रासुक बना नैवेद्य ले, मनवा हमारा झूमता।।
उत्तम क्षमा मार्दव धरें, और शौच आर्जव सत्य हो।
तप त्याग संयम ब्रह्ममय, मम धर्म आकिंचन्य हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढ़ोलक नगाड़े बाजते, लय ताल संग भवि नाचते।
होती प्रभु की आरती, तब पाप डरकर भागते।। उत्तम...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपों के घट की धूप ये, महका रही है दश दिशा।
आठों करम मम नाश हो, पायें प्रभु से शिव दिशा।। उत्तम...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज ने की साधना, वे मोक्ष के स्वामी बने।
रसदार फल से पूजकर, हम जिनचरणगामी बने।। उत्तम...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य की थाली सजा, दश धर्म की माला बना।
प्रभु आपकी पूजा रचा, हम पा गये सुख अनगिना।। उत्तम...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्म पूजाओं के पूर्णार्घ

(जोगीरासा छंद)

त्रस थावर जीवों की रक्षा, महाव्रती ही करते।
सबकी रक्षा करने वाले, पूर्ण अहिंसा धरते।।
क्षमा धर्म के भेद अनेकों, उत्तम क्षमा बढ़ाये।
क्षमा धर्म धर को हम पूजें, शाश्वत शिवसुख पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

मार्दव मान हरे प्राणी का, विनय मोक्ष दिलवाये।
उत्तम मार्दव धारी यति को, वसु विधि द्रव्य चढ़ायें।।
उत्तम मार्दव आत्म धर्म को, विनय सहित हम नमते।
मार्दव धर्म धार श्रद्धा से, हम सब शिव सुख वरते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

माया ठगनी ठगे जगत् को, उस माया को त्यागें।
माया से बचकर मुनि उत्तम, निज आतम अनुरागें।।
उत्तम आर्जव मुनिवर धारें, उनका ध्यान लगायें।
ताल नृत्य संगीत झाँझ संग, पूरण अर्घ चढ़ायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

त्रय लोकों की भोग संपदा, विषय भोग विषकारी।
सर्वश्रेष्ठ सिद्धों का सुख ही, अचल अतुल सुखकारी।।
उत्तम शौच धरम धरणीधर, लोभ पाप विनशायें।
तन-मन की शुचिता को पाने, भक्त भक्ति से ध्यायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छंद)

सत्य शिवं सुंदर अनुपम है, सत्य सुखों का सागर।
सत्य देव है सत्य गुरु है, सत्य धरम गुण आगर।।
सत्य धर्म के जिन आगम में, नाना भेद बताये।
उत्तम सत्य धर्म को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम, संयम सुख का साधन।
संयम व संयमधारी का, करते हम आराधन।।
उत्तम संयम धर्म श्रेष्ठतम, ऋषि मुनि गणधर धारें।
पूजन करने अर्घ चढ़ाने, आये हम गुरु द्वारे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

तप में तपकर जिनकी काया, परम शुद्ध बन जाती।
त्यागी संतों की महिमा को, सारी दुनिया गाती।।
उत्तम तप को श्रेष्ठ नरोत्तम, श्रमण महाऋषि धारें।
उनको अर्घ चढ़ाकर हम सब, उन सम तप को धारें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

सच्चे सुख को पाने गुरुवर, धन-वैभव सब त्यागें।
उत्तम त्याग धर्म अपनायें, आत्म निधि अनुरागें।।
उत्तम त्याग धर्म हम पाने, त्याग धर्म को पूजें।
अष्टम वसुधा को हम पायें, अष्ट करम सब छूटें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

मोह करम ही सदा जीव को, राग-द्वेष करवाता।
राग-द्वेष के वश हो प्राणी, चहुँगति कष्ट उठाता।।
उत्तम आकिंचन वृष पाने, गुरु से प्रीत लगायी।
सर्व परिग्रह त्यागी गुरु की, हमने भक्ति रचायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

दश धर्मों का ये है राजा, ब्रह्मचर्य कहलाये।
मन-वच-काया त्रय गुप्ति से, इसको हम अपनाये।।
ब्रह्म रूप आतम में रत हो, पूर्ण सुखी बन जाते।
उत्तम ब्रह्मचर्य को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ाते।।10।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आत्म धर्म जिनधर्म है, धर्म निजात्म स्वभाव।
शांतिधारा हम करें, नश जाये परभाव।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- मदन विजेता नाथ को, पुष्प चढ़ायें आज।
धर्मादिक पुरुषार्थ से, पायें शिवपुर राज।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्री उत्तम-क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षण धर्माय नमः स्वाहा।
(2) ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्माय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- दश धर्म उजागर, भरते गागर, कैसे हम रस पान करें।
जयमाला गायें, प्यास बुझायें, भवसागर से मोक्ष वरें।।

(चौपाई)

दश धर्मों को नमन हमारा, इससे पाये मुक्ति द्वारा।
जिनने भी इसको उर धारा, उन मुनियों को नमन हमारा।।1।।

पहला धर्म क्षमा कहलाये, तीव्र क्रोध की आग बुझाये।
मार्दव मृदुता भाव जगाये, मान भाव को दूर हटाये।।2।।

आर्जव से ऋजुता को धारें, कपट जाल माया परिहारें।
शौच बिना शुद्धि नहीं होती, लोभी की नित दुर्गति होती।।3।।

सत्य धर्म शिवसुख का दाता, झूठ नर्क की सैर कराता।
संयम साधन मोक्ष डगर का, पाप असंयम साधन दुःख का।।4।।

उत्तम तप धारो नित प्राणी, कहती है प्रभुवर की वाणी।
त्याग बिना सुख नहीं मिलेगा, पुष्प अग्नि में नहीं खिलेगा।।5।।

आकिंचन्य वृष पाप छुड़ावे, परिग्रह ग्रह होकर डस जावे।
उत्तम ब्रह्मचर्य कहलाता, पाप कुशील वही विनशाता।।6।।

क्षमा आदि दश धर्म बताये, सर्व दुःखों से मुक्त करायें।
दशा सुधारे दिशा दिखाये, निश्चय आतम सुख प्रगटाये।।7।।

चलो दशों धर्मों को जाने, आगम से यह व्रत हम जाने।
दश उपवास करे जो कोई, संयम सम जीवन तब होई।।8।।

दश धर्मों को हम अपनायें, शाश्वत मुक्ति रमा को पायें।
समिति गुप्तिमय धर्म कहाये, 'आस्था' से उसको अपनायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षण धर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- **जिनवाणी जिनधर्म के, शाश्वत हैं दश धर्म।**
'आस्था' से धारण करें, नाशें सारे कर्म।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम क्षमा धर्म पूजा

(जोगीरासा छंद)

दश धर्मों में प्रथम धर्म श्री, क्षमा धर्म कहलाता।
इसको जो भी धारण करता, महामोक्ष फल पाता।।
क्षमाधर्म धारी प्रभु का मैं, पूजन करने आया।
जिनवर का आह्वान करूँ मैं, पुष्पों संजोकर लाया।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

नीर क्षीर के उत्तम घटभर, मैं प्रभु का अभिषेक करूँ।
इतना पुण्य बढ़ाऊँ जग में, त्रय रोगों का कष्ट हरूँ।।
क्रोध कषाय विजेता जितने, उनके मैं नित गुण गाऊँ।
उत्तम क्षमा धर्मधारी बन, क्रोधाग्नि पर जय पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों की चंदन है रज, आप्त प्रभु के वाक्य यही।
प्रभु की पग रज शीश लगाकर, पाऊँगा मैं मोक्ष मही।। क्रोध कषाय.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर का एक वाक्य ही, जीवन अमर बना देता।
जो अक्षत से पूजे प्रभु को, अक्षय शिव सुख पा लेता।। क्रोध कषाय.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त सभी मिल पुण्य कमायें, पुष्प चढ़ा प्रभु चरणों में।
काम अरि को दूर भगाने, आये सब प्रभु चरणों में।। क्रोध कषाय.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर फैनी लड्डू बरफी, गुजियाँ पूड़ी लाया हूँ।
क्षुधारोग विनशाने भगवन्, अर्चा करने आया हूँ।। क्रोध कषाय.. ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चम-चम करती दीप आरती, अंधकार विनशाती है।
प्रभुवर की जो करे आरती, ज्ञान ज्योति मिल जाती है॥
क्रोध कषाय विजेता जितने, उनके मैं नित गुण गाऊँ।
उत्तम क्षमा धर्मधारी बन, क्रोधाग्नि पर जय पाऊँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाऊँ कर्म नशाऊँ, शिव रानी का वरण करूँ।
ऐसी शक्ति दो प्रभु मुझको, मोक्षमार्ग पे गमन करूँ॥ क्रोध कषाय.. ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पनस बिजौरा चोच मोच फल, आम जाम चीकू केला।
दाड़िम जामुन अर्पण कर मैं, बन जाऊँ प्रभु का चेला॥ क्रोध कषाय.. ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम भू को पाने वाले, जिन को शीश झुकाता हूँ।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु को, वसुविध द्रव्य चढ़ाता हूँ॥ क्रोध कषाय.. ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

पृथ्वीकायिक जीव की, रक्षा करें सदैव।
क्षमा माँग सब जीव से, प्रभु को भजें सदैव॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक सब जीव का, कर संरक्षण आज।
क्षमा धर्म को पूजते, पाने शिवपथ राज॥2॥

ॐ ह्रीं श्री जलकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकायिक जीव की, रक्षा करें सदैव।
उत्तम क्षमा सुधर्म की, पूजा करें सदैव।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकायिक जीव के, रक्षण का है भाव।
धारें वृष उत्तम क्षमा, पाने सिद्ध स्वभाव।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पतिकायिक सदा, हरियाली फैलाय।
इसकी हम रक्षा करें, क्षमा धर्म मन लाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिक स्थावर जीव परिरक्षण रूप उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निगोदी जीव का, करें नहीं हम घात।
क्षमा धर्म उत्तम वरें, करने कर्म विघात।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नित्यनिगोद रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतर निगोदी जीव की, रक्षा करते भव्य।
पूजें हम उत्तम क्षमा, लेकर उत्तम द्रव्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्री इतरनिगोद भव्य जीव रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विकलेन्द्रिय जीव की, रक्षा करें विशेष।
क्षमा धर्म हम पूजते, लेकर द्रव्य विशेष।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विकलेन्द्रिय त्रयभेद जीव रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय सब जीव के, रक्षा के हो भाव।
क्षमा धर्म उत्तम भजें, मन में रख के चाव।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय जीव रक्षणोत्तम क्षमा धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

त्रस थावर जीवों की रक्षा, महाव्रती ही करते।
सबकी रक्षा करने वाले, पूर्ण अहिंसा धरते।।

क्षमा धर्म के भेद अनेकों, उत्तम क्षमा बढ़ाये।
क्षमा धर्म धर को हम पूजें, शाश्वत शिवसुख पायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- क्रोध जीतने हम करें, प्रभु चरणों में धार।
क्षमावान प्रभु दो क्षमा, आये तेरे द्वार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- उत्तम क्षमा जहाँ रहे, उनका हृदय विशाल।
उनके चरणों में चढ़े, पुष्पों की ये माल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा- क्षमा धरम को धार, क्षमा बिना जीवन नहीं।
जयमाला सुखकार, क्षमा मयी जीवन बने।।

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय हो सुकमाल मुनीश्वर, उत्तम क्षमा धर्मधारी।
त्रय दिन खाये पैर श्यालनी, उस पर भी समताधारी।।
वन में जाकर ध्यान लगाया, वहाँ पशु मुनि को खाये।
तीन दिवस उपसर्ग सहनकर, मुनि सर्वार्थसिद्धि पायें।।1।।

धन्य सुकौशल महामुनीश्वर, महाधैर्य को अपनाया।
व्याघ्री का उपसर्ग सहनकर, परम सिद्ध पद को पाया।।
गजकुमार मुनि बाल यतीश्वर, सिर पर जिनके आग जले।
धन्य-धन्य मुनि गजकुमार वे, कर्म काटकर मोक्ष चले।।2।।

पाण्डव मुनि पर दुष्ट जीव ने, गरम लोह भूषण डाला।
उपसर्गों को जीत उन्होंने, मोक्ष स्वर्ग को वर डाला।।

पाँच शतक मुनिराजों को जब, नृप ने घानी में पैला।
समता से उनने फिर कीना, मृत्यु महोत्सव अलबेला।।3।।
सात शतक मुनि संग अकंपन, हस्तिनपुर में जब आये।
राजा बलि उपसर्ग रचाकर, मुनियों को दुःख पहुँचाये।।
धन्य सभी की त्याग तपस्या, तनिक नहीं वे घबराये।
धन्य मुनीश्वर विष्णु कुँवर जो, उनकी रक्षा हित आये।।4।।
पार्श्वनाथ तीर्थंकर प्रभु पर, कमठ घोर उपसर्ग करे।
सात दिवस उपसर्ग सहन कर, प्रभुवर केवलज्ञान वरें।।
श्रेणिक नृप जब दुष्ट भाव से, मुनिवर पर उपसर्ग करे।
मुनि यशोधर तीन दिवस तक, क्षमाभाव धर सहन करे।।5।।
दिशभूषण कुलभूषण मुनि पे, जब भीषण उपसर्ग हुआ।
राम लखन सीता ने आकर, सब संकट को दूर किया।।
सात्यकि रूद्र वीर जिनवर पर, करता है उपसर्ग महा।
क्षमा देख महावीर प्रभु की, चरण झुका वो रूद्र वहाँ।।6।।
इत्यादि मुनि वा सतियों पर, जब-जब भी उपसर्ग हुआ।
उत्तम क्षमा धर्म ही तब-तब, उनका उत्तम सखा हुआ।।
हम भी उन सम क्षमा धर्म को, तीन गुप्ति धर अपनायें।
शाश्वत जिनगुण सम्पत् पाने, 'आस्था' से गुरु को ध्यायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम मार्दव धर्म पूजा

(जोगीरासा छंद)

उत्तम मार्दव मृदुता लाता, मान कषाय घटाये।
मन मन्दिर के हृदयासन पर, भगवन् तुम्हें बिठायें।
अभिनन्दन आह्वान करें हम, मन मंदिर में आओ।
आओ-आओ नाथ हमारे, मन को सुखी बनाओ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ण रजत का कलश सजाया रत्न से।
करें न्हवन प्रभु का बहुरंगी यत्न से।।
मान कषाय अहम् अपना विनशा रहे।
अर्हंतों की पूजा कर सुख पा रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में जो भी गंध चढ़ा रहें।
भव संताप पाप उसके खुद जा रहें।। मान कषाय...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत शालि गजमोती हम अर्पण करें।
अनुपम अक्षय निधियाँ प्रभु जैसी वरें।। मान कषाय...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केवड़ा नीलकमल कचनार ले।
प्रभु के चरण चढ़ायें सुरभित हार ये।। मान कषाय...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन प्रभु को चढ़ा करेंगे अर्चना।
क्षुधा रोग विनशाने करते वंदना।।
मान कषाय अहम् अपना विनशा रहे।
अर्हंतों की पूजा कर सुख पा रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त करें दीपक ले जिन की आरती।
देव आरती मोहतिमिर परिहारती।। मान कषाय...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश मुख वाला सुंदर सा ले धूप घट।
जिन को धूप चढ़ाकर पायें मोक्ष तट।। मान कषाय...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम केला नारंगी अंगूर फल।
जिनवर को पूजें पायें हम मोक्ष फल।। मान कषाय...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन पुष्पादिक अर्घ सजाइये।
सर्वश्रेष्ठ जिनवर के चरण चढ़ाइये।। मान कषाय...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

वीतराग अर्हंत को, नमन करें शतबार।
अष्ट द्रव्य ले हाथ में, पूजें बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वीतराग अर्हंत देवपद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म में, भजें सिद्ध भगवान।
सब सिद्धों की अर्चना, करती है कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन सर्व आचार्य को, ये आचार्य महान्।
उत्तम मार्दव धर्म धर, करते जग कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पाठक यतिराज को, नमन करें त्रय बार।
पूजें इनके पद युगल, पायें ज्ञान अपार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप नित करें, सर्व श्रेष्ठ मुनिराज।
उन मुनियों को हम नमें, अष्ट द्रव्य ले आज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधु पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनचैत्य को, विनय भाव से ध्याय।
उत्तम मार्दव धर्म को, पूजें द्रव्य चढ़ाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक जिनचैत्य को, नमन करें हम भव्य।
अर्चें सब जिनबिम्ब को, लेकर आठों द्रव्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक संबंधी जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक जिनचैत्य को, नमें भक्ति के साथ।
पूजा कर प्रभु आपकी, सदा झुकायें माथ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोक संबंधी जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधोलोक के चैत्य को, नमन करें सुर इन्द्र।
हम भी उनको पूजते, बनकर उत्तम इन्द्र।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोक संबंधी जिनचैत्य पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र सब लोक के, उनकी भक्ति रचाय।
करें नमन इस भाव से, मार्दव गुण आ जाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व सिद्धक्षेत्र पद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व अतिशय क्षेत्र को, पूजें बारम्बार।
नमन वहाँ के नाथ को, दर्शन हो हर बार।।11।।

ॐ ह्रीं श्री समस्त अतिशय क्षेत्रपद नमन उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

मार्दव मान हरे प्राणी का, विनय मोक्ष दिलवाये।
उत्तम मार्दव धारी यति को, वसु विधि द्रव्य चढ़ायें।।
उत्तम मार्दव आत्म धर्म को, विनय सहित हम नमते।
मार्दव धर्म धार श्रद्धा से, हम सब शिव सुख वरते।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अहम् भाव जिनके नहीं, वो हैं श्री भगवान।
शांतिधारा हम करें, बनने आप समान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- तीन लोक के नाथ का, स्वागत करते आज।
धन्य हो गये हाथ ये, पुष्प चढ़ाके आज।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा- मानो प्रभु की बात, मान तजो मार्दव वरो।
पढ़ते हम जयमाल, विनय मुक्ति का द्वार है॥

(शंभु छंद)

जय बोलो उत्तम मार्दव की, जय हो श्री जिनवर स्वामी की।
जो मान नशावे उनकी जय, जय-जय हो केवलज्ञानी की॥
जो मान कषाय मिटाता है, वो सम्यक्दर्शन पाता है।
सम्यक्दर्शन ही प्राणी को, श्री मोक्ष महल पहुँचाता है॥1॥

श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रभु को, मन-वच-तन से नमन करें।
हित उपदेशी जिनधर्म श्रेष्ठ, उस धर्म मार्ग पे गमन करें॥
सिद्धों ने शाश्वत पद पाया, ऐसे सब सिद्धों को वंदन।
छत्तीस गुणों के धारक श्री, आचार्य गुरु हरते क्रंदन॥2॥

ज्ञानी ध्यानी पाठक यतिवर, श्री उपाध्याय को नित्य भजें।
धारा है वेश दिगम्बर को, ऐसे साधु के चरण जजें॥
जो क्षमा आदि गुण के धारी, निज आत्मध्यान में लीन रहे।
पूजन करके उन गुरुओं की, नित विनय नम्रता सीख रहे॥3॥

सब अतिशय क्षेत्रों को वंदन, जिन प्रतिमाओं को करें नमन।
जिस भू से सिद्ध अनंत हुये, उन सिद्ध क्षेत्र को करें नमन॥
शाश्वत अकृत्रिम चैत्य बिम्ब, उन सबकी पूजा दुःखहारी।
तीनों लोकों की जिन प्रतिमा, सब भव्यों को मंगलकारी॥4॥

जिसने भी मान किया जग में, वो दुर्गति जाते अभिमानी।
रावण दुर्योधन कंस राज, ये नरक गये राजा मानी॥

पाते हैं विद्या विनयवान, जग में वो नाम कमाते हैं।
शिवभूति मुनि मार्दव गुण से, केवलज्योति को पाते हैं।।5।।

मुनि चन्द्रगुप्त मृदुता धारें, सुरगण उनकी भक्ति करते।
उत्तम मार्दव धारी गुरुवर, निश्चय से मोक्ष महल वरते।।
श्री देव-शास्त्र गुरुवर ज्ञानी, हम विनय करें मृदुता धारें।
इनके चरणों में ही झुककर, सम्पूर्ण दुःखों को परिहारें।।6।।

श्री पंच परम परमेष्ठी प्रभु, जिनधर्म चैत्य माँ जिनवाणी।
त्रय योगों से हम विनय करें, बनने भगवन् सम्यक्ज्ञानी।।
यह मार्दव मान घटाता है, व्रत समिति गुप्ति दिलवाता है।
'आस्था' से इसको जो पूजे, वो महा मोह विनशाता है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम आर्जव धर्म पूजा

(गीता छंद)

आर्जव कहे ऋजुता धरो, माया कपट को त्याग दो।
उत्तम धरम को धारकर, मुनिधर्म को स्वीकार लो।।
ऐसे धरम को पूजता, उत्साह मन में धार के।
आह्वान पुष्पों से करूँ, पूजा प्रभु की तार दे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

नीरादिक से नाथ का, जो अभिषेक रचाय।
जन्म जरादिक रोग से, वो मुक्ति पा जाय।।
नाम मंत्र हम सब जपें, मन निर्मल बन जाय।
प्रभु अर्चा में जो लगा, वो सुख शांति पाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म पीछे लगा, भव-भव में भटकाय।
भव-भव के अघ नाशने, प्रभु पद गंध लगाय।। नाम..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल भाव मेरे बने, ले धवलाक्षत पुँज।
चढ़ा रहा प्रभु आपको, पाने मोक्ष निकुँज।। नाम..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु आप हो, हे तीर्थंकर देव।
पुष्प चढ़ा मैं आपको, मेटूँ काम कुदैव।। नाम..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

समवशरण में ना लगे, कभी भूख व प्यास।
चारों दान मिले वहाँ, जो रहता प्रभु पास।।
नाम मंत्र हम सब जपें, मन निर्मल बन जाय।
प्रभु अर्चा में जो लगा, वो सुख शांति पाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह तिमिर मिथ्यात्व ही, दुर्गति में भटकाय।
करूँ आरती नाथ की, ज्ञान ज्योति मिल जाय।। नाम..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक सुरभित धूप से, जिन मंदिर महकाय।
धूप अर्चना भक्त के, आठों कर्म नशाय।। नाम..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नींबू तेंदू आँवला, दाड़िम चीकू आम।
प्रभुवर को फल से भजूँ, पाऊँ शिवपुर धाम।। नाम..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों द्रव्यों से करूँ, जिनवर का गुणगान।
अष्टम वसुधा को वरूँ, बन जाऊँ भगवान।। नाम..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम आर्जव धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

श्री अरिहंत जिनेश को, नमन करें हम आज।
उत्तम आर्जव प्राप्त हो, अर्घ चढ़ायें आज।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनंतानंत को, नमन भक्ति के साथ।
अष्ट द्रव्य से हम भजें, सदा नमावें माथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला में जो बसे, मुक्त वही कहलाय।
मुक्ति हेतु उनको नमन, वसु विधि द्रव्य चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशिला स्थित मुक्तात्म नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस गुणधारी गुरु, श्री आचार्य महान्।
अर्घ चढ़ा उनको नमें, उन सम बनें महान्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक आचार्य को, करें परोक्ष प्रणाम।
पूजा सेवा भक्ति कर, जपें नित्य गुरु नाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठि परोक्ष नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय परमेष्ठि को, नमते शीश झुकाय।
जल फलादि वसु द्रव्य से, पूजा भक्ति रचाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय त्रयकाल के, उनको नमन परोक्ष।
पढ़ें-पढ़ावें ये गुरु, कभी ना करते रोष।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठि परोक्ष नमनयुत आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन सर्व मुनिराज को, धारें आर्जव भाव।
अर्घ चढ़ावें हम उन्हें, मिले गुरु पद छाँव।।8।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठि नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व श्रमण को आज हम, नमें परोक्ष त्रिकाल।
सर्व साधु की अर्चना, करती माला माल।।9।।

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठि परोक्ष नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी को नित नमें, पाने आतम धर्म।
अर्घ देय ऋजु भाव से, नष्ट करें सब कर्म।।10।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवाणी नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय क्षेत्रों को नमन, दर्शन कर सुख पाय।
करें अर्चना क्षेत्र की, अतिशय पुण्य कमाय।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र को है नमन, सिद्ध होय सब कार्य।
ऐसी अर्चा हम करें, सिद्ध बनें अनिवार्य।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिन सदन में, रहें अकृत्रिम चैत्य।
उनको अर्घ चढ़ाय हम, पाने आतम चैत्य।।13।।

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम जिनचैत्य नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम चैत्यों को सदा, नमन करें त्रयकाल।
अर्चन कर प्रभु आपकी, वरें लोक का भाल।।14।।

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिम जिनचैत्य नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल पूज्य स्थान को, वंदन बारम्बार।
सर्वद्रव्य ले हम करें, पूजा बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सकल पूज्य स्थल नमनयुत उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

माया ठगनी ठगे जगत् को, उस माया को त्यागे।
माया से बचकर मुनि उत्तम, निज आतम अनुरागे।।
उत्तम आर्जव मुनिवर धारें, उनका ध्यान लगायें।
ताल नृत्य संगीत झांझ संग, पूरण अर्घ चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निर्मल जल की धार से, धोवे कपट विकार।
सरल भाव ऋजुता धरें, करते शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- गंध पुष्प की खींचती, मंडराते अलि आय।
तन-मन जो सुरभित करे, ऐसे पुष्प चढ़ाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- आर्जव अपनावें, ऋजुता लावें, माया तजते मृदु बने।
जयमाला गावें, पुण्य बढ़ावें, जिन चरणों के भक्त बने।।

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम आर्जव धर्म हमारा, उत्तम गति दिलवाता है।
उत्तम उज्ज्वल भाव जगाने, दास शरण में आता है।।
माया छलनी छलती जग को, दुर्गति में ले जाती है।
जिसने छोड़ी मायाचारी, उसे सुगति मिल जाती है।।1।।

जो-जो करता मायाचारी, वो पशु आदिक बनता।
कहीं नहीं वो शांति पाता, तिल-तिल जलता रहता।।
कपट भाव से रहित जीव ही, जगत् पूज्य कहलाता।
सरल स्वभावी होकर जग में, यश कीर्ति को पाता।।2।।

जिनने छोड़ी मायाचारी, परमेष्ठी पद पाये।
ऐसे श्री अरिहंत प्रभु को, हम सब शीश झुकायें।।
लोक शिखर को पाया जिनने, आठों करम नशाते।
सिद्ध सौख्य शांति के दाता, सिद्धों को हम ध्याते।।3।।

श्री आचार्य गुरुवर पाठक, मुनिवर ज्ञानी ध्यानी।
इनके चरण कमल में आकर, पाते मुक्ति रानी।।
सर्व सिद्ध क्षेत्रों को वंदन, अतिशय जो दिखलाते।
कृत्रिमाऽकृत्रिम जिनबिम्बों को, विनय सहित हम ध्याते ।।4।।

मार्ग दिखाने वाली माता, सबकी माँ जिनवाणी।
सरस्वती माँ की वाणी को, सुनते सारे प्राणी।।
करें साधना साधु बनकर, गुप्ति त्रय हम पालें।
'आस्था' की जयमाल सजाकर, आये हम मतवाले।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आर्जव धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम शौच धर्म पूजा

(शेर छंद)

ये शौचधर्म मन के पाप मल को अपहरे।
शुचिता दिलाये मन की लुब्धता को नित हरे।।
उत्तम धरम है शौच हमें शुद्धि सिखाये।
आह्वान करते नाथ का जो मार्ग दिखायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

श्रीफल लगाके कुंभ पे पुष्पादि सजायें।
सम्पूर्ण नीर वाहिनी का नीर चढ़ायें।।
ये शौच धर्म हमको शुद्ध-बुद्ध बनाये।
जिनराज की सुन्दर छवि का दर्श कराये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर घिसके लायें ताप मेटने।
जिन पाद में लगा के पायें शांति भेंट में।। ये शौच धर्म.... ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोतियों के संग श्वेत शालि चढ़ायें।
अक्षय निधि के नाथ को भज पुण्य कमायें।। ये शौच धर्म.... ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंगीन फूल माल काम रंग को हरे।
सुन्दर सी पुष्प माल से जिन अर्चना करें।। ये शौच धर्म.... ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

छप्पन प्रकार की मिठाई थाल में सजा।
प्रभु को चढ़ायें ढोल नगाड़े बजा-बजा।।
ये शौच धर्म हमको शुद्ध-बुद्ध बनाये।
जिनराज की सुन्दर छवि का दर्श कराये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नों की थाल में जलायें दीप स्वर्ण के।
करते हैं आरती प्रभु की आके चर्ण में।। ये शौच धर्म....।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज की अर्चा में श्रेष्ठ धूप चढ़ायें।
स्व ध्यान धार आप जैसे रूप को पायें।। ये शौच धर्म....।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मीठे मनोज्ञ फल चढ़ायें नाथ आपको।
हमको भी मोक्षफल मिले हे नाथ ! साथ दो।। ये शौच धर्म....।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीरादि अष्ट द्रव्य की शुभ थाल सजायें।
गाके बजाके झूमते प्रभुवर को चढ़ायें।। ये शौच धर्म....।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

धर्म प्रतीति हो हमें, शौच धर्म मन भाय।
जिनने धारा धर्म ये, उनकी भक्ति रचाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मप्रतीति उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाक्य पवित्र उचारते, मुख अमृत बरसाय।
शौच धर्म धारी गुरु, वंदू मन-वच-काय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पवित्रवाक्य उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम चारित के धनी, करें चरित स्नान।
शुचिता जिनका रूप है, वे मुनि दें सद्ज्ञान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चारित्रस्नान उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मध्यान जो नित करें, करें स्वपर कल्याण।
कर्म काटकर वे गुरु, बन जाते भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आत्मध्यान उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुप्ति रक्षा करे, सद्गति गमन कराय।
शौच धर्म उत्तम धरें, मुनि निर्मल सुख पाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री गुप्तित्रय रक्षण उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कषायों से रहित, है शुचि उत्तम धर्म।
शुचिता के शुभ भाव से, मिले धर्म का मर्म।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्रोधादिरहित उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चैत्योपदेश से, होता सम्यक् दर्श।
जिनपूजा हम नित करें, पाये सम्यक् दर्श।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्योपदेश उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति गुप्ति व्रत हम धरें, व्रत ही पाप नशाय।
समीचीन व्रत हो हमें, इस हित पूजन गाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतसमित्यादि उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा उपदेश भी, मोक्षमार्ग दर्शाय।
मोक्षमार्ग हमको मिले, ऐसी भक्ति रचाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनपूजोपदेश उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मंत्र के जाप से, प्राप्त होय निज ब्रह्म।
पूजें उत्तम शौच धर्म, मिले स्वयं पर ब्रह्म।।10।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मजपादि उत्तम शौच धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

त्रय लोकों की भोग संपदा, विषय भोग विषकारी।
सर्वश्रेष्ठ सिद्धों का सुख ही, अचल अतुल सुखकारी।।
उत्तम शौच धरम धरणीधर, लोभ पाप विनशायें।
तन-मन की शुचिता को पाने, भक्त भक्ति से ध्यायें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- प्रभु के पद प्रक्षाल, हम उत्तम जल से करें।
अर्पण करते माल, रंग-बिरंगे पुष्प की।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- जो शुचिता धारे, कर्म विदारे, गुण संतोष सुलाभ वरे।
कर तन की शुचिता, मन की शुचिता, श्री जयमाला कंठ धरे।।

चौपाई

उत्तम शौच धरम सुखकारी, इसको धारें बनें पुजारी।
शौच धरम को गुरुवर धारें, तज देते वे वैभव सारे।।1।।

लोभ पाप है अति दुःखकारी, संतोषी को शुचिता प्यारी।
जहाँ लोभ मन में आ जाये, सारे पाप वहाँ हो जाये।।2।।

ऊँच-नीच भेदों को भूले, भव भोगों में मनवा झूले।
पंचेन्द्रिय विषयों की आशा, देखे जहाँ पलट दे पाशा।।3।।

मन भोगों में दौड़ा जावे, तृष्णा मन की बढ़ती जावे।
लोभी नरकादिक् में जाये, दुर्गतियों में कष्ट उठाये।।4।।

चाम लपेटी चमके काया, तन को ही केवल चमकाया।
मन चमकाये तन चमकेगा, भोगों से वैराग्य जगेगा।।5।।

जिसने तजी अशुचिता सारी, सुन्दर काया नाथ तिहारी।
तप से तन को नित्य तपायें, शौच धरम तन-मन में लायें।।6।।

शौच धरम को जिसने जाना, उसने पाया मोक्ष खजाना।
बंधु मित्र सुत नारी साथी, सोना चाँदी रत्न व हाथी।।7।।

चक्री नारायण पद सारे, स्थिर पद ना कोई हमारे।
देवगुरु आगम की वाणी, लोभ पाप को छोड़ों प्राणी।।8।।

शुचिता बिन कल्याण न होई, बिन शुचिता के मुक्ति न होई।
त्रय गुप्ति से शुचिता धारें, 'आस्था' से आये प्रभु द्वारे।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम सत्य धर्म पूजा

(गीता छंद)

यह धर्म उत्तम सत्य है, यह सत्य ही शिवरूप है।
जिनने इसे धारण किया, वो ही बने शिवभूप हैं।।
ऐसे धरम को पूजते, हम हाथ में बहुपुष्प ले।
आओ त्रिलोकी जिन प्रभो, गुणगान करते भक्ति से।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

सुंदर सुसज्जित कलशे, हम लाये प्रभु के दर पे।
प्रभु पद में सलिल चढ़ायें, जन्मादिक रोग नशायें।।
यह सत्य धर्म उपकारी, पूजा करते नर-नारी।
श्री सत्य जिनेश्वर जाने, हम आये उनको ध्याने।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध सुहानी, प्रभु पद से प्रीत पुरानी।
मिट जाये भव की दूरी, आशायें कर दो पूरी।। यह सत्य..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुँज चढ़ायें, सुख वैभव शांति पायें।
दो अक्षय निधियाँ स्वामी, हम बने प्रभु पथ गामी।। यह सत्य..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की लाये माला, मन भक्त बना मतवाला।
श्री जिन को माल चढ़ायें, शिवपुर की माला पायें।। यह सत्य..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम लाये शुद्ध मिठाई, प्रभुवर की भक्ति रचाई।
उनको नैवेद्य चढ़ाते, हम अपनी क्षुधा मिटाते।।
यह सत्य धर्म उपकारी, पूजा करते नर-नारी।
श्री सत्य जिनेश्वर जाने, हम आये उनको ध्याने।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु पूर्ण सत्य के ज्ञाता, हरलो प्रभु पाप असाता।
दीपक ले आरती गायें, निज आतम दीप जलायें।। यह सत्य..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है गंध धूप की आली, अंबर तक जाने वाली।
जिन सन्मुख धूप जलायें, कर्मों का संग छुड़ायें।। यह सत्य..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनपूजा का शुभ फल ये, श्री मोक्षप्रदाता फल है।
हम फल की थाल चढ़ायें, शाश्वत शिवफल को पायें।। यह सत्य..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्यों की थाल सजायें और मंगल वाद्य बजायें।
प्रभु के रंग में रंग जाये, हर्षित चित अर्घ चढ़ायें।। यह सत्य..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सत्य धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

क्रोध कषायों से रहित, होता उत्तम सत्य।
परम सत्य का लाभ हो, पूजें उत्तम सत्य।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्रोधातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ रहित इक सत्य है, सत्यं शिवं अनूप।
परम सत्य सुन्दर अति, सत्य ही भगवन् रूप।।2।।

ॐ ह्रीं श्री लोभातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भयातिचार रहित बनो, कहता उत्तम सत्य।
निर्भय निज आतम रमे, पाये उत्तम सत्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भयातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्य व्यंग्य के पाप से, सत्य झूठ बन जाय।
क्षमा माँगते भाव से, सत्य हृदय बस जाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री हास्यातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आज्ञा हमने तजी, किया प्रभु ! अतिचार।
क्षमा माँगते भाव से, सत्य प्रभु का द्वार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जिनाज्ञालंघनातिचार रहित उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश क्षेत्र के वाक्य को, कहते जनपद सत्य।
ऐसे जनपद सत्य को, पूजें पाने सत्य।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जनपद उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूढ़ि से जो नाम है, संवृत सत्य कहाय।
ऐसे संवृत सत्य को, आठों द्रव्य चढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संवृत्त उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें सत्य स्थापना, चित्र काष्ठ पाषाण।
पूजें हम इस सत्य को, पाने सत्य महान्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री स्थापना उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसा अपना नाम हो, वैसा होवे काम।
नाम सत्य सार्थक करें, लेकर प्रभु का नाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नाम उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप सत्य का श्रेष्ठ है, गुण से श्रेष्ठ बनाय।
सुन्दर सत्य हमें मिले, ऐसी भक्ति रचाय॥10॥

ॐ ह्रीं श्री रूप उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य अनेक प्रकार है, एक अपेक्षा सत्य।
जीवों के बहु धर्म को, कहे अपेक्षा सत्य॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अपेक्षा उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर को भगवन् कहे, सत्य रूप व्यवहार।
इसकी हम पूजा करें, पाने मुक्ति द्वार॥12॥

ॐ ह्रीं श्री व्यवहार उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक पलटने को समर्थ, इन्द्रादि सुर देव।
यही सत्य सम्भावना, कहते जिनवर देव॥13॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भावना उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अमूर्तिक ना दिखे, ये है सत्य स्वभाव।
द्रव्य भाव से हम जजें, पाने उत्तम भाव॥14॥

ॐ ह्रीं श्री भाव उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दूजे के कार्य लख, जो गुरु उपमा देय।
प्रचलित उपमा सत्य है, इनको जानो ज्ञेय॥15॥

ॐ ह्रीं श्री उपमा उत्तम सत्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

सत्य शिवं सुंदर अनुपम है, सत्य सुखों का सागर।
सत्य देव है सत्य गुरु है, सत्य धरम गुण आगर॥
सत्य धर्म के जिन आगम में, नाना भेद बताये।
उत्तम सत्य धर्म को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सत्य धरम शांति करे, झूठ रहे ना पास।
जल से मन निर्मल करें, बनें प्रभु के दास।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- शिव ही सुंदर रूप है, शिव ही सत्य स्वरूप।
सुन्दर पुष्प चढ़ा रहे, पाने सिद्ध स्वरूप।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- सत्य धरम जग पूज्य है, सत्य महाव्रत जान।
उसकी जयमाला पढ़ें, पाने मोक्ष महान्।।

(जोगीरासा छंद)

जैनधर्म का प्राण सत्य है, सत्य मूल कहलाता।
पूर्ण सत्य को एक अकेला, केवलज्ञान बताता।।
तीर्थंकर जिन मुनि बनें तब, मौन साधना धारें।
केवलज्ञान बिना वे भगवन्, कुछ भी ना उच्चारें।।1।।

कम से कम बोले जो प्राणी, जग में पूजा जाता।
हित-मित-प्रिय वाणी के द्वारा, यश कीर्ति वो पाता।।
इसीलिये जिनवर ने हमको, सत्य अनेक बताये।
जीवों की रक्षा के हेतू, सत्य धर्म अपनायें।।2।।

सत्य धर्म है सत्य त्याग है, सत्य महाव्रत पालें।
वचन गुप्ति हो सदा साथ में, भाषा समिति पालें।।

सत्य धर्म ही साथी बनकर, जग में जीत दिलाये।
सत्य वचन से नारद आदिक्, स्वर्ग मोक्ष सुख पाये।।3।।

होती जीत सत्य की जग में, जग सारा ये जाने।
ऐसे सत्य धरम को भव्यों, गुरु मुख से पहिचाने।।
सत्य अनोखा बड़ा निराला, सत्य सभी को प्यारा।
सत्य धर्म को जिसने धारा, उनको नमन हमारा।।4।।

निर्मल नीर समान सत्य ये, सबके पाप मिटाये।
एक बार जो मिथ्या बोले, सर्व दुःखों को पाये।।
अहंकार के वश हो जिसने, सत्य धर्म ठुकराया।
नहीं बचा वो भूप वसु भी, नरक सातवाँ पाया।।5।।

सत्य धर्म परमेश्वर अपना, सत्य भवोदधि तारे।
परम सत्य भगवद् सत्ता में, सच्ची श्रद्धा धारें।।
उत्तम सत्य धरम को हम भी, धारें शिव सुख पायें।
श्रद्धा से इस सत्य धर्म को, 'आस्था' शीश झुकाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम सत्य धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम संयम धर्म पूजा

(गीता छंद)

निज आत्म की रक्षा करें, संयम धरें भव से तिरे।
संयम बिना कोई नहीं, संसार सागर से तिरे॥
संयम मनुज को जिन बना, पावन करे संसार में।
संयम धनी को पूजने, आये प्रभू के द्वार पे॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

बनकर इन्द्रादिक् देव, प्रभु का न्हवन करें।
हम करें चरण की सेव, प्रभु त्रय रोग हरें॥
संयम पाने हम नाथ, उत्तम भक्ति करें।
उत्तम संयम के साथ, शिवसुख धाम वरें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कर्पूर सुगंध, सबका ताप हरे।
प्रभु चरण लगा हम गंध, भव संताप हरें ॥ संयम पाने..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये उत्तम अक्षत पुँज, अर्पण है प्रभु को।
मिल जाये मोक्ष निकुँज, हम पूजें जिन को॥ संयम पाने..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की लेकर माल, आये प्रभु शरणा।
हम करते अर्पण थाल, पूजें प्रभु चरणा॥ संयम पाने..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये क्षुधा सदा रुलवाय, जग में भरमाये।
यह क्षुधा नशाने नाथ, व्यंजन हम लाये॥ संयम पाने..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

करते हम आरती नाथ, मोह तिमिर नशने।
जिनवर को नमते माथ, संयम निधि वरने।।
संयम पाने हम नाथ, उत्तम भक्ति करें।
उत्तम संयम के साथ, शिवसुख धाम वरें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम पाकर भगवान, आठों कर्म नशें।
हम धूप चढ़ा धर ध्यान, भव का भ्रमण नशें।। संयम पाने..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम फल लाये जिननाथ, हमको शरणा लो।
हे समोशरण के नाथ, मोक्ष सुफल दे दो।। संयम पाने..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टम वसुधा की आश, ले जिन दर आये।
यह भक्त करे अरदास, अर्घ सजा लाये।। संयम पाने..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

एकेन्द्रिय सब जाति की, रक्षा के हो भाव।
उत्तम संयम हम भजें, धारें संयम भाव।।1।।

ॐ ह्रीं श्री एकेन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीन्द्रिय सब जाति की, रक्षा करें सदैव।
ये ही संयम धर्म है, पूजें इसे सदैव।।2।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रीन्द्रिय जाति जीव की, रक्षा के परिणाम।
प्रेम करें सब जीव से, हो संयम परिणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुरिन्द्रय सब जाति की, रक्षा करते भव्य।
उत्तम संयम पालने, सदा चढ़ायें द्रव्य।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय सब जाति की, रक्षा वत्सल भाव।
सिद्धरूप सब जीव हैं, जाने संयम भाव।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रिय जाति रक्षण उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन के विषय को, त्यागें श्री मुनिराज।
कठिन तपस्या जो करे, उनको पूजें आज।।6।।

ॐ ह्रीं श्री स्पर्शनेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय के विषय तज, करते जो उपवास।
उन मुनियों को हम भजें, बनें उन्हीं के दास।।7।।

ॐ ह्रीं श्री रसनेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय के विषय तज, तजें राग वा द्वेष।
उत्तम संयम से सजें, धरें दिगम्बर वेश।।8।।

ॐ ह्रीं श्री घ्राणेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु इन्द्रिय का विषय, त्याग करें मुनिराज।
उन मुनियों को हम भजें, बजा-बजा कर साज।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेत्रेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुने सुनायें जिन वचन, देते सद् उपदेश।
कर्णेन्द्रिय का राग तज, ये गुरु का संदेश।।10।।

ॐ ह्रीं श्री कर्णेन्द्रिय विषय रहित उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय संध्या में नियम से, कर सामायिक ध्यान।
पाते संयम गुण श्रमण, उनका है गुणगान।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिक रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छेदोपस्थापना चरित, है संयम का भेद।
उसके धारक श्रमण भज, करें ना मन में खेद।।12।।

ॐ ह्रीं श्री छेदोपस्थापना रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत परिहार विशुद्धि भी, संयम शुद्धि बढ़ाय।
संयम ही बहु जीव को, सिद्ध लोक पहुँचाय।।13।।

ॐ ह्रीं श्री परिहार विशुद्धि रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्मसांपराय चरित, अंतस् दीप जलाय।
हमें शीघ्र मिल जाय वो, इस हित भक्ति स्चाय।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मसांपराय रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात संयम धरें, अर्हत् सिद्ध महान्।
अंतिम संयम भेद ये, देता मोक्ष महान्।।15।।

ॐ ह्रीं श्री यथाख्यात रूप उत्तम संयम धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (चौबोल छंद)

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम, संयम सुख का साधन।
संयम व संयमधारी का, करते हम आराधन।।
उत्तम संयम धर्म श्रेष्ठतम, ऋषि मुनि गणधर धारें।
पूजन करने अर्घ चढ़ाने, आये हम गुरु द्वारे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- संयम समता दो प्रभु, करता शांतिधार।
संयम के पाने सुमन, अर्पित सुन्दर हार।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

धत्ता- संयम की माला, सुख की शाला, जयमाला की माल कहें।
असंयम छोड़ा, बंधन तोड़ा, मोक्ष शिखर जिन आप रहे।।

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम संयम है हितकारी, पूज्य परम पद दिलवाता।
संयम जिसके पास नहीं है, वो मानव पशु कहलाता।।
संयम रत्न मोक्ष की सीढ़ी, उत्तम संयम शिव द्वारा।
जिसने संयम व्रत को धारा, उनको पूजे जग सारा।।1।।

ब्रह्म गुलाल सेठ ने देखो, क्रीड़ा में मुनि पद धारा।
लेकिन वापस घर ना आये, दृढ़ता से व्रत स्वीकारा॥
ज्ञान नहीं पर भोजन हेतू, नंदीमित्र श्रमण बनते।
करें समाधि स्वर्ग सिधारे, आगे चंद्रगुप्त बनते॥2॥
इन्द्रिय प्राणी संयम दो हैं, द्वादश भेद बताये हैं।
करुणा धारें त्रस थावर पे, उनके प्राण बचायेंगे॥
पंचेन्द्रिय मन को वश करना, यही धर्म बतलाता है।
जो कोई इस व्रत को पाले, संयमधर कहलाता है॥3॥
संयम वीर पुरुष के होता, मुनिवर इसके अधिकारी।
ऐसे संयमधर साधु को, पूज रहे सुर नर नारी॥
पाँच समिति इन्द्रिय रोधन, पंच महाव्रत को धारें।
तीन गुप्ति आवश्यक पालें, निज स्वरूप को विस्तारें॥4॥
ज्ञान ध्यान है जिनका भूषण, विषय कषायों को छोड़ें।
सर्व परिग्रह के जो त्यागी, समता से नाता जोड़ें॥
त्रय संध्या सामायिक करते, राग-द्वेष माया छोड़ें।
छेदोपस्थापन संयमधर, कर्मों के बंधन तोड़ें॥5॥
सूक्ष्म लोभ हर यथाख्यात धर, मोहकर्म को विनशायें।
जगत्पूज्य बन जाते वे गुरु, शूरवीर वे कहलायें॥
संयम से भवसागर तिरते, मोक्ष शिखर वो पा जायें।
ऐसे श्री गुरु के चरणों में, 'आस्था' आतम सुख पाये॥6॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है॥
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम तप धर्म पूजा

(गीता छंद)

उत्तम धरम तप कह रहा, तप से मिले निज आत्मा।
उस आत्मा को प्राप्त करने, हम भजें परमात्मा।।
तप और तपधर नाथ का, आह्वान पुष्पों से करें।
मन में विराजो नाथ अब, हम भक्ति से पूजन करें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रोला छंद)

पावन निर्मल नीर, घट में भरकर लायें।
जन्म जरा मृत नाश, प्रभु के चरण चढ़ायें।।
उत्तम तप हित आज, तप की अर्चा गायें।
पूजा कर हम नाथ, अपने पाप नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुरभित गंध, घिस प्रभु पाद लगायें।
हम प्रभु पद की धूल, अपने शीश लगायें।। उत्तम तप..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर तप धार, अक्षय सुख को पायें।
हम अक्षय सुख हेतु, अक्षत पुंज चढ़ायें।। उत्तम तप..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ब्रह्म परमात्म, ब्रह्म रूप प्रगटायें।
हम मन्मथ क्षय हेत, चरणन् पुष्प चढ़ायें।। उत्तम तप..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम व्यंजन लेय, हम प्रभु पूजा करते।
पाने उत्तम श्रेय, द्वादश तप को वरते।।
उत्तम तप हित आज, तप की अर्चा गायें।
पूजा कर हम नाथ, अपने पाप नशायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म मोहनी नाश, केवल ज्योति जगायी।
केवलज्ञानी नाथ, हमने आरती गायी।। उत्तम तप..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म श्रृंखला तोड़, अष्टम भू जिन पायें।
अष्टम मगरी हेत, उनको धूप चढ़ायें ।। उत्तम तप..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

केला आदि सजाय, प्रभु को आज चढ़ायें।
छम-छम वाद्य बजाय, घूमर नृत्य रचायें।। उत्तम तप..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसु द्रव्यों का थाल, लाये प्रभु के दर पे।
पद अनर्घ मिल जाय, अर्घ चढ़ायें भर के।। उत्तम तप..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

जिनगुण संपत्ति व्रत करे, उत्तम तप उपवास।
जिनगुण निधि की प्राप्ति हो, होवे कर्म विनाश।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्ति उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मक्षपण व्रत धारकर, उत्तम तप अपनाय।
इस व्रत की पूजा रचा, कर्मों पर जय पाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कर्मक्षपण उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत महा, श्रद्धा से अपनाय।
समता से उपवास कर, इसको अर्घ चढ़ाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महा सिंहनिष्क्रीड़ित उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु सर्वतोभद्र व्रत, सर्वश्रेष्ठ सुखदाय।
उत्तम तप उर धारकर, इसकी अर्चा गाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री लघु सर्वतोभद्र उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासर्वतोभद्र व्रत, उत्तम गति कराय।
निज पर के कल्याण हित, इस व्रत को अपनाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महासर्वतोभद्र उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु निष्क्रीड़ित व्रत करें, उत्तमादि त्रय रूप।
उत्तम द्रव्य चढ़ा रहे, पाने सिद्ध स्वरूप।।6।।

ॐ ह्रीं श्री लघु निष्क्रीड़ित उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तावली उत्तम निधि, व्रत कर मुक्ति पाय।
मुक्ता से जिन को भजों, कहते सब गुरुराय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तावली उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकावलि व्रत धारकर, करें कर्म का नाश।
कनकरत्न से हम भजें, बनें प्रभु के दास।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कनकावलि उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धारें आचाम्ल हम, एकाशन के साथ।
त्याग करें हम शक्ति से, शक्ति दो जग नाथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आचाम्ल उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुदर्शन व्रत करें, पायें सम्यक् दर्श।
इस व्रत को नित पूजकर, नाशें मिथ्यादर्श।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन तप मुनिवर करें, करें श्रेष्ठ उपवास।
उत्तम तप को पूजने, आये गुरु के पास।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अनशन उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कम खाये जो भूख से, होता अवमौदर्य।
इस तप को हम पूजते, पालें अवमौदर्य।।12।।

ॐ ह्रीं श्री अवमौदर्य उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत परिसंख्या कर श्रमण, विधि से ले आहार।
मुनियों के तप त्याग को, पूजें विविध प्रकार।।13।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यान उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन छोड़ते, नीरस ले आहार।
रस परित्यागी वे गुरु, वरें मोक्ष साकार।।14।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्याग उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फलक चटाई भूमि पे, शयन करें गुरुराय।
विविक्तशय्यासन धरें, तप से मन चमकाय।।15।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्याशन उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश तप धारकर, छोड़ें तन से मोह।
ऐसे त्यागी जीव ही, क्षय करते हैं मोह।।16।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेश उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रायश्चित्त तप के धनी, करते पश्चात्ताप।
सब पापों से छूटने, करते गुरु नित जाप।।17।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु की विनय, करें सतत जो संत।
विनय महातप धारकर, बन जाते अरहंत।।18।।

ॐ ह्रीं श्री विनय उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बालवृद्ध रोगी गुरु, आदि तपस्वी जान।
इनकी वैय्यावृत्त से, पायें केवलज्ञान।।19।।

ॐ ह्रीं श्री वैय्यावृत्त उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर तप स्वाध्याय है, स्व का हो अभ्यास।
करें सतत स्वाध्याय हम, हो सच्चा विश्वास।।20।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्याय उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप व्युत्सर्ग को, अर्घ चढ़ायें आज।
प्राप्त करें सौभाग्य हम, मिले मोक्ष साम्राज।।21।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्ग उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तिम तप इक ध्यान है, ध्यान कर्म विनशाय।
करें ध्यान की साधना, बनें सिद्ध जिनराय।।22।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यान उत्तम तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

तप में तपकर जिनकी काया, परम शुद्ध बन जाती।
त्यागी संतों की महिमा को, सारी दुनिया गाती।।
उत्तम तप को श्रेष्ठ नरोत्तम, श्रमण महाऋषि धारें।
उनको अर्घ चढ़ाकर हम सब, उन सम तप को धारें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु चरणों की छाँव में, मिलता मुक्ति द्वार।
जल की त्रय धारा करें, पायें शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- सूरज के आताप से, खिले सुगंधित फूल।
पुष्प समर्पण हम करें, पाने प्रभु पद धूल।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- तप में तपकर ही बनें, श्रमण सिद्ध भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें, करें भक्त गुणगान।।

(चौपाई)

उत्तम तप की जय-जय बोलें, तप का रस जीवन में घोलें।
तप में तपते भविजन सारे, श्रमण सिद्ध बन मोक्ष सिधारें ॥1॥

तप बिन कंचन शुद्ध न होता, बिना तपे मन शुद्ध न होता।
शुद्ध-बुद्ध पदवी को पाने, मुनि तप तपते कर्म खपाने॥2॥

तप से काया कंचन होती, पा जाते वो केवल ज्योति।
द्वादश तप को जो अपनाते, नानाविध उपवास रचाते॥3॥

नदी किनारे ध्यान लगाते, गर्मी शैल शिखर पे जाते।
तन से माया ममता छोड़ें, प्रभुवर से इक नाता जोड़ें॥4॥

सर्दी गर्मी या हो वर्षा, ध्यान मग्न रहते नित हर्षा।
बहुविध व्रत उपवास रचायें, जिनगुणसंपत् व्रत अपनायें॥5॥

मुक्तावलि आदि तप सारे, महाघोर दुर्द्धर तप धारें।
प्रभुवर ने जो व्रत बतलाये, उनको साधक करते जायें॥6॥

इस प्रकार द्वादश तप पालें, मोक्षमार्ग के वो रखवाले।
उनको नहीं प्रमाद सतावे, रंचमात्र भी क्रोध न आवे।।7।।

जहाँ-जहाँ मुनि ध्यान लगावें, जीवों में मैत्री हो जावे।
कण-कण में खुशहाली छावे, दूर-दूर तक शांति समावे।।8।।

विपदायें सारी मिट जाती, सर्व संपदा घर-घर आती।
तप की महिमा इतनी भारी, जिसको ना जाने संसारी।।9।।

वृषभनाथ के शत सुत न्यारे, उत्तम तप कर मोक्ष पधारे।
बाहुबली वर्षी तप धारें, कर्म नाश फिर जिनपद धारें।।10।।

भरत चक्री कर मुनि की सेवा, पात्र दान का पाया मेवा।
मुनि बन तत्क्षण कर्म नशायें, एक घड़ी में जिन पद पाये।।11।।

उत्तम तप को हम भी धारें, त्रय गुप्ति से भाग्य संवारें।
'आस्था' से जो तप अपनाये, उत्तम तप का फल वो पाये।।12।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम त्याग धर्म पूजा

(जोगीरासा छंद)

त्याग धर्म जिनने अपनाया, वो त्यागी कहलाये।
जग के नश्वर पद को तजकर, परमातम पद पाये।।
आओ हम सब करें अर्चना, वीतराग जिनवर की।
हृदय कमल से कमल चढ़ायें, चाह करें शिवपुर की।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

सागर सरिता का पानी, भर लाते हैं भवि प्राणी।
प्रभुवर का न्हवन कराते, सम्यक् रत्नत्रय पाते।।
जिन चरण कमल की पूजा, सुख देती प्रभु की पूजा।
हम त्याग धर्म को ध्यायें, जिनवर की शरणा आयें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कश्मीरी प्यारी, प्रभु चरण लगायें सारी।
मेटो संताप हमारा, छूटे ना प्रभु का द्वारा।। जिन चरण..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अनुपम सुखदाता, प्रभु तुमको सब जग ध्याता।
हम प्रभु को शीश झुकाते, धवलाक्षत नित्य चढ़ाते।। जिन चरण..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले कुसुम मनोहर ताजे, जिनद्वार बजायें बाजे।
हम भक्त नाचते आते, प्रभु चरणन् पुष्प चढ़ातें।। जिन चरण..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट्रस व्यंजन की थाली, पूजन में आज सजाली।
हम अर्चा करें तुम्हारी, नाशों प्रभु क्षुधा हमारी।।
जिन चरण कमल की पूजा, सुख देती प्रभु की पूजा।
हम त्याग धर्म को ध्यायें, जिनवर की शरणा आये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीर्थंकर संग तीर्थों की, जिन ऋषिवर मुनि यतियों की।
हम आरती करने आये, छम-छम-छम नृत्य रचायें।। जिन चरण..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की कृष्ण घटायें, बादल बनकर मंडरायें।
प्रभु सन्मुख धूप चढ़ायें, हम कर्मन् धूल उड़ायें।। जिन चरण..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शिवफल की चाह लगी है, तन-मन में भक्ति जगी है।
हम प्रभु का कीर्त्तन गायें, आमादि श्रीफल लायें।। जिन चरण..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसु द्रव्य सजा हम लायें, भावों की गंध मिलायें।
हम प्रभु को अर्घ चढ़ायें, आतम अमृत रस पायें।। जिन चरण..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

तन की ममता जो तजें, करें ना तन से मोह।
त्याग चलें जग संपदा, नाश करें वो मोह।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तन ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जननी की ममता तजे, मिले शारदा मात।
सच्ची माता है वही, हरपल देती साथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जननी ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागें पितृ ममत्व को, धार दिगम्बर वेश।
श्रेष्ठ पिता अरहंत हैं, कहते मुनि गणेश।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पितृ ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागा पुत्र ममत्व को, छोड़ा जग संसार।
इस असार संसार में, निज आतम इक सार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुत्र ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागें राज्य ममत्व जो, धरे दिगम्बर वेश।
ऐसे उत्तम त्याग से, मिले सिद्ध का देश।।5।।

ॐ ह्रीं श्री राज्य ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन वाहन के त्याग से, पाया स्वर्ग विमान।
त्याग धर्म ही लोक में, सच्चा मोक्ष विमान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री धन वाहनादि ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागें त्रिया ममत्व को, मुक्ति रमा वर लेय।
उत्तम त्यागी जीव ही, कर्म नष्ट कर लेय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्री ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह कुटुम्ब का मोह तज, उत्तम भाव बनाय।
त्याग धर्म ही श्रेष्ठ है, त्यागी संत बताय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री गृहकुटुम्ब ममत्व उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म भाव को जो कषे, वो कषाय कहलाय।
सर्व कषायें त्याग कर, निष्कषाय बन जाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री कषायभाव उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष ही जीव को, भव-भव भ्रमण कराय।
त्याग धर्म हर जीव को, श्री जिनदेव बनाय॥10॥

ॐ ह्रीं श्री राग-द्वेष उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

सच्चे सुख को पाने गुरुवर, धन-वैभव सब त्यागें।
उत्तम त्याग धर्म अपनायें, आत्म निधि अनुरागें॥
उत्तम त्याग धर्म हम पाने, त्याग धर्म को पूजें।
अष्टम वसुधा को हम पायें, अष्ट करम सब छूटें॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- त्याग दिया संसार को, बने आप भगवान।
तव समान पद प्राप्त हो, माँगें यह वरदान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- मन पुष्पों सा खिल उठे, प्रभु के चरणन् पाय।
तन-मन-जीवन धन्य हो, प्रभु को पद्म चढ़ाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- त्याग धर्म उत्तम कहा, त्याग धर्म गुणखान।
जयमाला से हम करें, जिनवर का गुणगान॥

(नरेन्द्र छंद)

उत्तम त्याग धर्म की जय हो, जय हो सारे मुनियों की।
यतिवर मुनिजन जिसको धारें, जय हो सारे ऋषियों की॥

जिसने त्याग धर्म को धारा, उनने उत्तम गति पायी।
ऐसे त्यागी मुनिराजों की, हमने गुणगाथा गायी।।1।।
जो अपनाये त्याग धर्म को, राग-द्वेष मद मोह तजे।
मात-पिता सुत नारी बंधु, कुटुम्ब कबीला सभी तजे।।
धन वैभव और राज्य खजाना, वाहन आदि नहीं रखे।
तन से भी निर्मोही बन के, त्याग धर्म का स्वाद चखे।।2।।
पात्र दान के अनुमोदन से, दुःखी रंक भी भूप बने।
त्याग धर्म से नंदीमित्र भी, चंद्रगुप्त सम्राट बने।।
अकृत पुण्य दान के द्वारा, धन्यकुँवर नृप श्रेष्ठ बने।
उत्तम त्याग धर्म अपनाकर, चरम स्वर्ग में देव बने।।3।।
मन इन्द्रिय को वश में करते, क्रोधादि से दूर रहे।
पाप-पुण्य ममता को तजते, करुणा मैत्री भाव रहे।।
आर्त्त रौद्र ध्यानों को तजकर, धर्म शुक्ल दो ध्यान करें।
श्रेणी आरोहण वो करके, उत्तम केवलज्ञान वरें।।4।।
समवशरण या गंधकुटी में, जिन बन शिवपथ समझायें।
कर्मश्रृंखला के मोचन के, सूत्र जगत् को सिखलायें।।
हम भी आये पूजा करने, त्याग धर्म को अपनायें।
तीन गुप्ति धर शिवसुख पाने, 'आस्था' प्रभु को शिर नाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम आकिंचन्य धर्म पूजा

(शम्भु छंद)

उत्तम आकिंचन धरम कहा, वो धर्म मोक्ष सुख दिलवाये।
वो धर्म प्रभु के पास मिले, इस हेतू प्रभु के गुण गायें।।
कमलासन से प्रभु अधर रहे, फिर भी कमलों से हम पूजें।
आह्वान विधि पूर्वक करते, प्रभुवर को सुर-किन्नर पूजें।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

निर्मल नीर प्रभु को आज चढ़ा रहे।
त्रय रोगों से मुक्ति पाने आ रहे।।
उत्तम आकिंचन्य धर्म धारें सदा।
जिन अर्चा से पायें सिद्धी सर्वदा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन प्रभु के पाद लगा रहे।
प्रभु पद में अर्पण कर भाग्य जगा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोती तंदुल प्रभु तुम्हें चढ़ा रहे।
परम पुण्य पाने हम जिन गुण गा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माला हम तुम्हें चढ़ा रहे।
मोक्षप्रदायी पुण्य माल हम पा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूख प्यास बाधा दुःख पहुँचाती सदा।
हे जिनवर ! हर लेना व्याधि रोग क्षुधा।। उत्तम आकिंचन्य...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप ये चम-चम चमके थाल में।
करें आरती जिनवर की सुर-ताल में।।
उत्तम आकिंचन्य धर्म धारें सदा।
जिन अर्चा से पायें सिद्धी सर्वदा।।6।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बाती धूप अगरबत्ती निर्दोष हो।
प्रभु को धूप चढ़ाकर मन निर्दोष हो।। उत्तम आकिंचन्य...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम मौसंबी नारंगी सजा।
प्रभु को अर्पित सर्व श्रेष्ठ बाजे बजा।। उत्तम आकिंचन्य...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल अक्षत चरु पुष्प दीप फल ला रहे।
धूप ध्वजा संग प्रभु को अर्घ्य चढ़ा रहे।। उत्तम आकिंचन्य...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन्य धर्म विधान के अर्घ

दोहा- दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

मैं ही नित्य अनित्य अरूपी, मैं ज्ञानी कहलाता।
मैं को छोड़ जगत् में मेरे, कोई काम न आता।।
इस अनित्य भावना को मैं, हरपल हर क्षण ध्याऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनित्य रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा कोई शरण नहीं है, ना मैं शरण किसी का।
मैं ही शरण बनूँगा अपना, ना होऊँगा किसी का।।
यही भावना भाने भगवन्, अशरण भाव जगाऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अशरण रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये संसार असार कहाता, इसमें सार नहीं हैं।
सुख दुःख की ये धूप छाँव है, कोई सुखी नहीं है।।
इस जग में रहकर भी अब मैं, निज का ध्यान लगाऊँ।। उत्तम..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संसार रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ही तो एकत्व रूप हूँ, मैं ही कर्त्ता धरता।
मैं के बिन ना कोई जगत् में, सुख-दुःख का ना भरता।।
यही मुख्य एकत्व भावना, इसको निशदिन भाऊँ।। उत्तम..।।4।।

ॐ ह्रीं श्री एकत्व रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो एक अमूर्त्त द्रव्य हूँ, ये तन मूर्त्त कहाता।
नीर क्षीरवत् मैं और काया, भिन्न-भिन्न कहलाता।।
तन वा तन से जुड़े बंधु जन, इनसे मोह हटाऊँ।। उत्तम..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अन्यत्व रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं को ये ही तन दिलवाये, प्रभु सम पूज्य बनाये।
रत्नत्रय का साधन ये तन, ये ही सिद्ध बनाये।।
अशुचि तन से शुचिता पाने, उत्तम तप अपनाऊँ।। उत्तम..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अशुचि रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष जब करता हूँ मैं, कर्म निकट आ जाते।
मैं ही इनको पास बुलाता, ये आश्रव कहलाते।।
मोह राग अब करूँ नहीं मैं, आश्रव सर्व रुकाऊँ।। उत्तम..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आस्रव रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कर्मों को रोके संवर, मैं भी और बढ़ाये।
स्व चिंतन की ओर बढ़ा मैं, पर का राग हटाये।।
संवर से कर कर्म निर्जरा, पुण्य-पाप विनशाऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संवर रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सविपाक अविपाक निर्जरा, ये दो भेद कहाते।
समय पूर्व और पूर्ण समय पर, अंतर प्रभू बताते।।
तप संयम व समता धरकर, अपने कर्म नशाऊँ।। उत्तम..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री निर्जरा रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से मैं भटका, तीन लोक के माही।
मैं को ना जाना पहिचाना, पर में झूला राही।।
तीन लोक का श्रेष्ठ सिद्धपद, हे जिनवर ! मैं पाऊँ।। उत्तम..।।10।।

ॐ ह्रीं श्री लोक रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति दुर्लभ है नर गति पाना, मैंने इसको पाया।
जैनधर्म और जिनकुल पाकर, हे जिन ! तुमको ध्याया।।
सम्यक् बोधि मुझे मिल जाये, यही भावना भाऊँ।। उत्तम..।।11।।

ॐ ह्रीं श्री बोधिदुर्लभ रूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व वस्तु का जो स्वभाव है, वो ही धर्म कहाता।
ज्ञाता दृष्टा है मम आतम, निज स्वभाव कहलाता।।
आत्म धर्म को पाने भगवन्, धर्म भावना भाऊँ।। उत्तम..।।12।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मरूपोत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ही चेतन ज्ञान स्वरूपी, मात पिता ना मेरे।
बंधु बांधव और परिजन, कोई न साथी मेरे।।
मैं को छोड़ अन्य सब चेतन, उनसे राग हटाऊँ।। उत्तम..।।13।।

ॐ ह्रीं श्री चेतन रूप अब्रह्म परित्याग आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोना-चाँदी हीरे-मोती, आदि परिग्रह भारी।
रूपया पैसा वा धन वैभव, महल मकान अटारी।।
सर्व अचेतन बाह्य परिग्रह, इनसे मोह हटाऊँ।
उत्तम आकिंचन्य धरम को, वसु विधि अर्घ चढ़ाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अचेतन रूप बाह्य परिग्रह त्याग आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध मान माया लोभादि, हास्यादि ये कषायें।
अंतरंग मिथ्यात्व अरि ये, ये परिग्रह कहलाये।।
किन्चित भी परिग्रह नहीं मेरा, इनका मोह नशाऊँ।। उत्तम..।।15।।

ॐ ह्रीं श्री अंतरंग परिग्रह त्याग आकिंचन्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मोह करम ही सदा जीव को, राग-द्वेष करवाता।
राग-द्वेष के वश हो प्राणी, चहुँगति कष्ट उठाता।।
उत्तम आकिंचन वृष पाने, गुरु से प्रीत लगायी।
सर्व परिग्रह त्यागी गुरु की, हमने भक्ति रचायी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु के चरणों में मिले, शांति अपरम्पार।
शांति पाने मैं करूँ, प्रभु चरणों में धार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- कमलासन के मध्य में, बैठे जिनवर आप।
पुष्प चढ़ाके चरण में, करूँ प्रभु का जाप।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जयमाला हम गा रहे, भक्ति भाव के साथ।
जयमाला धारण करें, सदा झुकायें माथ।।

(गीता छंद)

जय-जय हो आकिंचन धरम, जय-जय कहें इस धर्म की।
सम्पूर्ण परिग्रह को तजें, जय-जय कहें मुनिधर्म की।।
त्यागी तपस्वी ऋषि यति, इस धर्म के धारी बने।
अत्यल्प परिग्रह भी जहाँ, संक्लेश का कारण बने।।1।।

वह जीव संतोषी सुखी, जिसने परिग्रह को तजा।
वो भव्य ही मुनिराज बन, निज आत्म का लेते मजा।।
मूर्छा नहीं ममता नहीं, सम भाव में रहते सदा।
मन में विषमता है नहीं, कर्त्तव्य निज पालें सदा।।2।।

नदी शैल रवि के सामने, दुर्द्धर तपस्या वो करें।
नित ध्यान योगाभ्यास से, गुरु कर्म को जर-जर करें।।
भाते हैं द्वादश भावना, बाईस परिषह भी सहें
उपसर्ग में समता धरें, मुख से न कटु वाणी कहें।।3।।

पूजा करे कुछ आपकी, अथवा दे कोई गालियाँ।
कोई उतारे आरती, कोई बजावे तालियाँ।।
सुख-दुःख व कंचन काँच में, समभाव चेहरे पे रहे।
चारित्र धारी वे श्रमण, दृढ़ मेरु से अविचल रहे।।4।।

सागर सी है गंभीरता, विषयों की वांछा है नहीं।
क्रोधादि चार कषाय उनके, पास में आती नहीं।।

ख्याति व पूजा लाभ की, इच्छा तनिक भी है नहीं।
पर से विमुख मुनिराज ही, निज आत्म को पाते सही।।5।।

श्री ऋषभ जिन से वीर तक, सब त्याग आकिंचन बनें।
बाहुबली चक्री भरत, श्री राम कर्माजन हनें।।
आजन्म दिग्-अम्बर बने, जिनसेन वीराचार्य हैं।
बहुश्रुत सृजेता धर्मनेता, कुंदकुंदाचार्य हैं ।।6।।

जिनदेव के शुभ ध्यान से, काटे करम स्वयमेव ही।
निज में रमण करके गुरु, बनते परम जिनदेव ही।।
ऐसे गुरु के चरण में, श्रद्धा सुमन अर्पण करें।
अर्चा करें 'आस्था' धरें, त्रय गुप्ति से भवदुःख हरें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्य धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा

(गीता छंद)

त्रैलोक्य से पूजित सदा, ये ब्रह्मचर्य महान् है।
धारण करें जो भव्यजन, बनते वही भगवान हैं।।
आह्वान प्रभु का हम करें, बहु ब्रह्म पद्म गुलाब से।
जिनराज की अर्चा करें, सर्वोच्च व्रत का लाभ ले।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

श्री आप्त जिनागम जिनवर की, जल से पूजन करने आये।
त्रय रत्नों को पाने हेतू, पूजन कर मन में हर्षायें।।
दश धर्मों में अति उत्तम जो, उस ब्रह्मचर्य व्रत को वंदन।
उत्तम व्रतधर परमेष्ठी का, हम भक्ति से करते अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म ब्रह्म पाया जिनने, उनको शुचि गंध लगाया है।
उनकी अति पावन पग रज को, हमने निज शीश लगाया है।। दश.. ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पद अर्हत् सिद्धों का, उस पद की बस अभिलाषा है।
अक्षत के पुंज चढ़ा उनको, पूरी हो मम अभिलाषा ये।। दश.. ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कचनार कमल और सेवन्ती, चंपक चंपा हम ले आये।
उनकी अति सुंदर माल बना, प्रभु पद में रख अति हर्षाये।। दश.. ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु पूजा से मारक विष भी, अमृत बन प्राण बचाता है।
षट्रस व्यंजन के थाल उन्हें, हर भक्त चढ़ा सुख पाता है॥
दश धर्मों में अति उत्तम जो, उस ब्रह्मचर्य व्रत को वंदन।
उत्तम व्रतधर परमेष्ठी का, हम भक्ति से करते अर्चन॥5॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे समवशरण के अधिनायक, केवलज्ञानी केवल वर दो।
अज्ञानजयी श्रुत ज्योति मिले, ऐसा जीवन जगमग कर दो॥ दश.. ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक आठों ही कर्मों के, चउ गतियों में भटकाते हैं।
दुःखदायी गतियों से बचने, जिनवर को धूप चढ़ाते हैं ॥ दश.. ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर आम केला दाड़िम, जामुन नारंगी सीताफल।
पूजा करते करते इक दिन, पा जायेंगे निश्चित शिवफल॥ दश.. ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये ब्रह्मचर्य मंगलकारी, व्रत का राजा जग सुखकारी।
हम अर्घ लिये अर्चा करते, बनने जिनपद के अधिकारी॥ दश.. ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म विधान के अर्घ

दोहा– दशलक्षण दश धर्म का, करते भव्य विधान।
श्री मंडप के बीच में, बैठे श्री भगवान॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

स्त्री सहवास तजे जो, उत्तम ब्रह्मचर्य धरे वो।
इस ब्रह्मचर्य को ध्यायें, हम उत्तम अर्घ चढ़ायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसहवास वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री के अंग न देखें, आगम में गुरु उल्लेखे।
इस ब्रह्मचर्य को ध्यायें, हम उत्तम अर्घ चढ़ायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमनोहरांग निरीक्षण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग वचन ना बोलें, प्रभु भक्ति का रस घोलें।। इस...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री रागवचन वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भोग भोग कर आये, उनको विस्मृत कर जायें।। इस...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगानुस्मरण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस गरिष्ट रस त्यागें, भक्ति में मनवा लागे।। इस...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वृष्येष्ट रस वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार करें ना तन का, संस्कार करें चेतन का।। इस...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री स्व-शरीर संस्कार वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री के संग ना सोयें, अपने व्रत को ना खोयें।। इस...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्री शय्यासन वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी काम कथा न करें हम, बस प्रभु की कथा करें हम।। इस...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री काम कथा वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरपेट न भोजन करना, पंचेन्द्रिय मन वश करना।। इस...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उदरपूर्णाशिन वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि शील दृढ़ पालें, निज आतम के रखवाले।। इस...।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नवधा शील पालनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोषण ना करें करायें, तन-मन की शक्ति बढ़ायें।। इस...।।11।।

ॐ ह्रीं श्री शोषण कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप काम विनशायें, निज तप की शक्ति बढ़ायें।। इस...।।12।।

ॐ ह्रीं श्री संताप कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटन काम को छोड़ें, भक्ति में मन को जोड़ें।
इस ब्रह्मचर्य को ध्यायें, हम उत्तम अर्घ चढ़ायें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री उच्चाटन कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वशीकरण काम विनशायें, हम प्रभु के वश हो जायें।। इस...।।14।।

ॐ ह्रीं श्री वशीकरण कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोहन काम भगायें, निज मोह राग विनशायें।। इस...।।15।।

ॐ ह्रीं श्री मोहन कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पुलकित काम दुःखारी, दुःखदायी ये बीमारी।। इस...।।16।।

ॐ ह्रीं श्री पुलकित कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवलोकन काम नशायें, स्व अवलोकन कर जायें।। इस...।।17।।

ॐ ह्रीं श्री अवलोकन कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम हास्य काम विघटाये, निज काम व्यथा विनशायें।। इस...।।18।।

ॐ ह्रीं श्री हास्य कामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काय कुचेष्टा छोड़ें, मायाचारी भी छोड़ें।। इस...।।19।।

ॐ ह्रीं श्री इंगित चेष्टा वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये मारण काम कहाये, इनको तजकर सुख पाये।। इस...।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मारणकामबाण वर्जनोत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

दश धर्मों का ये है राजा, ब्रह्मचर्य कहलाये।
मन-वच-काया त्रय गुप्ति से, इसको जो अपनाये।।
ब्रह्म रूप आतम में रत हो, पूर्ण सुखी बन जाये।
उत्तम ब्रह्मचर्य को हम सब, पूरण अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ब्रह्मचर्य की भावना, बढ़ती व्रत के साथ।
शांति से बढ़ते चलें, नमा प्रभु को माथ।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- ब्रह्मचर्य व्रत की महक, सुरभित सुमन हजार।
प्रभु के चरणों में चढ़ा, पायें सौख्य अपार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- ब्रह्मचर्य व्रत की पढ़ें, जयमाला हम आज।
आस्था से धारण करें, पायें शिव साम्राज्य।।

(अडिल्ल छंद)

जय-जय-जय श्री ब्रह्मचर्य गुणखान है।
दश धर्मों में उत्तम श्रेष्ठ महान् है।।
जिसने इसको धारा वो अर्हत् बनें
कर्म काट वो श्रेष्ठ सिद्ध भगवन् बनें।।1।।

पूर्ण ब्रह्मव्रत होता श्री जिनराज के।
महाव्रती में होता श्री मुनिराज के।।
अणुरूप में श्रावक इसको पालता।
मन-वच-काया से दोषों को टालता।।2।।

ब्रह्मचर्य की महिमा बड़ी विशाल है।
सुर-नर-किन्नर नमते अपना भाल हैं।।

सेठ सुदर्शन जब शूली पे चढ़ गये।
शील धर्म से जय पाकर भव तर गये।।3।।

शील धर्म की धारी माँ सीता सती।
सती अंजना चंदन व राजुल मती।।
द्रोपदी नीली सोमा और मनोरमा।
नहीं फँसी वे पापों में निज मन रमा।।4।।

देवों द्वारा ये सतियाँ पूजित हुईं।
शील धर्म के कारण जग मंडित हुईं।।
नव कोटि से हम उनका अर्चन करें।
ब्रह्मचर्य पे 'आस्था' रख भव से तिरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

क्षमावाणी पूजा

(गीता छंद)

जिसने रखी उत्तम क्षमा, वो ही क्षमाधारी बने।
तीर्थेश त्रिभुवन के प्रभु, हम आपके रागी बने।।
शक्ति मिले हमको प्रभो, आह्वान थापन हम करें।
हे नाथ आओ मन बसो, पूजन भजन हम नित करें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रत्नत्रय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

श्री जिनेन्द्र भगवान की, छवि हृदय को भाय।
निर्मल जल ले कुंभ में, प्रभु का न्हवन कराय।।
क्षमावाणी उत्तम धरम, समता दीप जलाय।
इसकी हम पूजा करें, उत्तम द्रव्य चढ़ाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निशंकितांगाय नमः, निकांक्षितांगाय नमः, निर्विचिकित्सांगाय नमः, निर्मूढ़ताय नमः, उपगूहनांगाय नमः, स्थितिकरणांगाय नमः, वात्सल्यांगाय नमः, प्रभावनांगाय नमः, व्यंजनव्यंजिताय नमः, अर्थ समग्राय नमः, तदुभयसमग्राय नमः, गुरुपादापन्हवाय नमः, बहुमानोन्मानाय नमः, अहिंसाव्रताय नमः, सत्यव्रताय नमः, अचौर्यव्रताय नमः, ब्रह्मचर्यव्रताय नमः, अपरिग्रहव्रताय नमः, मनोगुप्त्यै नमः, वचनगुप्त्यै नमः, कायगुप्त्यै नमः, ईर्यासमित्यै नमः, भाषासमित्यै नमः, एषणा समित्यै नमः, आदान-निक्षेपणसमित्यै नमः, व्युत्सर्गसमित्यै नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री बोलकर, प्रभु पद गंध लगाय।
प्रभु चरणों की गंध से, अपना शीश सजाय।। क्षमावाणी..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत धवल ले, बहुविध रत्न चढ़ाय।
प्रभु को अर्पण हम करें, पुंज अनेक चढ़ाय।। क्षमावाणी..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को पुष्प चढ़ा रहे, मंत्र जाप के साथ।
सर्व कर्म होवें विलय, विनय करें हम नाथ।।
क्षमावाणी उत्तम धरम, समता दीप जलाय।
इसकी हम पूजा करें, उत्तम द्रव्य चढ़ाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधारोग हरने प्रभु, चढ़ा रहे नैवेद्य।
हरो हमारे रोग सब, हे त्रिभुवन के वैद्य !।। क्षमावाणी..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत दीपक से आरती, हर दिन प्रभु की गाय।
प्रभुवर के दरबार को, दीपों से चमकाय।। क्षमावाणी..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में खे रहे, बहुविध सुरभित धूप।
सर्वकर्म मम नाश हो, प्रगट होय जिनरूप।। क्षमावाणी..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु आपके नाम की, पूजा करें सदैव।
आम्रादि अर्पण करें, पार करो जिनदेव।। क्षमावाणी..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गंध वसु द्रव्य की, थाली भव्य सजाय।
अविनाशी भगवान के, चरणन् अर्घ चढ़ाय।। क्षमावाणी..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निर्मल भावों से करें, प्रभु चरणन् जल धार।
प्रभु के पद प्रक्षाल से, पायें शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- सुंदर-सुंदर फूल से, मनवा अति हर्षाय।
फूल चढ़ा प्रभु चरण में, जिन का ध्यान लगाय।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- पर्व क्षमावाणी कहे, सरल करो परिणाम।
जयमाला इसकी पढ़ें, पायें मोक्ष मुकाम।।

(नरेन्द्र छंद)

क्षमावान ही क्षमा भाव से, क्षमा भावना चित्त धरें।
क्षमा धर्म को पाने हेतू, जिन गुरुओं को नमन करें।।
रत्नत्रय को धारण करके, जो मुनि उत्तम सुख पाते।
उनके चरणों में नत हो हम, उनसे रत्नत्रय पाते।।1।।

शिवपद का सोपान सुदर्शन, सम्यक्ज्ञान खजाना है।
तीजा सम्यक् चारित उत्तम, इससे सिद्धी पाना है।।
अष्ट अंगयुत सम्यक्दर्शन, ज्ञान अष्टविध कहलाये।
तेरह भेद कहे चारित के, हम इनको पाने आये।।2।।

शंका छोड़ो बनो निशंकित, अंग निशंकित कहता है।
जग के सुख की इच्छा त्यागो, अंग निकांक्षित कहता है।।

निर्विचिकित्सा कहता हमसे, ग्लानि भाव नहीं लाओ।
अंग अमूढ़ दृष्टि को धारो, सर्व मूढ़ता विनशाओ।।3।।

उपगूहन कहता है भव्यों, गुण अवगुण को पहिचानो।
गिरते को जो सदा उठाये, स्थितिकरण उसे मानो।।
गौ बछड़े सम प्रेम अमर हो, वत्सल अंग सिखाता है।
अंग आठवाँ है प्रभावना, धर्म प्रभाव बढ़ाता है।।4।।

सम्यक्ज्ञान आठ अंगों युत, केवलज्ञान दिलाता है।
इनमें जो श्रद्धा कर लेता, निश्चय भव तर जाता है।।
पाँच महाव्रत पाँच समिति, तीन गुप्तियाँ जो पाले।
सर्व परिग्रह के त्यागी ही, सम्यक् तप करने वाले।।5।।

राग-द्वेष मद मोह विनाशे, समता संयम को धारें।
क्षमा धनी उत्तम मुनियों की, अर्चा सब दुःख परिहारे।।
गुरुओं की सेवा पूजा से, क्षमावान हम बन जाये।
करें वंदना त्रय गुप्ति से, 'आस्था' से भव तिर जायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन-अष्टांग सम्यग्ज्ञान-त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षण धर्मेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा- दश धर्मों की गा रहे, मंगलमय जयमाल।
पुष्पों की माला चढ़ा, होवे मालामाल।।

(त्रोटक छंद)

जयकार करें प्रभु द्वार खड़े, दश धर्मों की हम सीढ़ी चढ़े।
चलते जाये बढ़ते बढ़ते, दश धर्मों को वंदन करते।।1।।

क्रोधादि तजें मोहादि भगे, इस क्षमा धरम की ज्योति जगे।
मुनिराज क्षमा गुण को धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।2।।

मार्दव मानो सुख का साधन, बनता है समता में कारण।
मार्दव से मृदुता को वरते, दश धर्मों को वंदन करते।।3।।

आर्जव माया से मुक्त करे, मन-वच-काया को सरल करे।
आर्जव गुण से निज को भरते, दश धर्मों को वंदन करते।।4।।

शुचिता बिन शुद्धि नहीं होती, लोभी दुनिया दुःख में रोती।
यह शौच धरम मुनिवर धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।5।।

यह सत्य सुखों का मन्दर है, शिव शांति का वो समन्दर है।
नित सत्य श्रेष्ठ झरने झरते, दश धर्मों को वंदन करते।।6।।

उत्तम संयम पालो प्राणी, इन्द्रिय मन वश कर लो प्राणी।
मुनिवर उत्तम संयम धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।7।।

उत्तम तप से सब कर्म झरे, द्वादश तप में जीवन निखरे।
तप में तप कर कुंदन बनते, दश धर्मों को वंदन करते।।8।।

वृष त्याग परम हितकारी है, पूजा करते संसारी हैं।
उत्तम त्यागी मुनिवर बनते, दश धर्मों को वंदन करते।।9।।

उत्तम आकिंचन धारेंगे, मुनि बन कर्मों को काटेंगे।
सम्पूर्ण परिग्रह मुनि तजते, दश धर्मों को वंदन करते।।10।।

यह ब्रह्मचर्य उत्तम व्रत है, मुनियों के यही महाव्रत है।
शुचि ब्रह्मचर्य मुनिवर धरते, दश धर्मों को वंदन करते।।11।।

दश धर्म दशों दिश चमकेगा, सुरभित पुष्पों सम महकेगा।
त्रय गुप्ति से पालन करते, दश धर्मों को वंदन करते।।12।।

श्रद्धा से हम गुणगान करें, 'आस्था' से भवदधि पार करें।
जिन चरणों का आश्रय वरते, दश धर्मों को वंदन करते।।13।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एक वर्ष में दशलक्षण व्रत, तीन बार ही आता है।
दशलक्षण है आत्म सुलक्षण, सबको राह दिखाता है।।
दश वर्षों तक जो व्रत पालें, दश-दश जो उपवास करें।
समिति गुप्ति को धारण करके, 'आस्था' से शिवराज वरें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प.पू. सोमदेव आचार्य का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

समता है आभूषण जिनका, धैर्य क्षमा गुणधारी।
सोमदेव आचार्य ऋषिवर, जय हो सदा तुम्हारी।।
अष्ट द्रव्य की सुन्दर थाली, गुरुवर तुम्हें चढ़ायें।
दो आशीष हमें भी गुरुवर, तुम जैसे बन जायें।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री सोमदेव गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

(नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से महावीर तक, चौबीस जिन को नमन करूँ।
कल्पतरू श्री शांतिनाथ को, गणधर श्रुत को नमन करूँ॥
महावीर जिन के शासन में, महावीर कीर्ति गुरुवर।
उनसे दीक्षित कुंथुसागर, वे मेरे दीक्षा गुरुवर॥1॥

कनकनंदी गुरु गुप्तिनंदी को, शीश झुका मन हर्षायें।
गुरु चरण की छत्रछाँव में, मेरी किस्मत जग जाये॥
कार्तिक कृष्णा तेरस के दिन, यह विधान प्रारम्भ किया।
माघसुदी दशमी के शुभ दिन, इस विधान को पूर्ण किया॥2॥

धर्ममयी नगरी बड़ौत में, पुण्य उदय मेरा आया।
शुभ आशीष सभी गुरुओं का, मैंने जीवन में पाया॥
दशों दिशा में दश धर्मों की, धर्म ध्वजा नित फहराये।
शाश्वत हैं दश धर्म हमारे, इनको हम सब अपनायें॥3॥

पूर्ण शास्त्र का ज्ञान नहीं है, छंद शास्त्र का ज्ञान नहीं।
जिनपूजा में चित्त लगाने, नित्य चले ये कलम सही॥
गुप्तिनंदी आचार्य गुरु की, कृपा शीश पे सदा रहे।
'आस्थाश्री' की यही प्रार्थना, श्रद्धा सब पे सदा रहे॥4॥

दोहा– सूर्य चंद्रमा का रहे, भू पर दिव्य प्रकाश।
दशलक्षण गुणखान का, होवे दिव्य विकास॥
'आस्था' से यह व्रत करे, समिति गुप्ति के साथ।
तीन लोक परमेश को, जोड़ें हम सब हाथ॥

इति अलम्

दशलक्षण धर्म की आरती नं. 1

(तर्ज–प्यारा लागे छे गुरुराज....)

दशलक्षण गुणखान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी, आरती उतारें...

1. दश धर्म अतिशय मंगलकारी, शाश्वत पर्व परम सुखकारी।
कीर्त्तन करें गुणगान, आज थारी.....

2. प्रथम क्षमामय धर्म कहाये, मार्दव आर्जव मन में बसायें।
दश धर्म है पहचान, आज थारी.....

3. उत्तम शौच शुचिता लाये, सत्य धरम के घोष लगायें।
यही हमारी शान, आज थारी.....

4. संयम है श्रृंगार हमारा, तप से पाओ मुक्ति द्वारा।
त्याग धर्म सुख खान, आज थारी.....

5. धर्म आकिंचन पाप छुड़ाता, ब्रह्मचर्य से सुख मिल जाता।
पायें सम्यक्ज्ञान, आज थारी.....

6. रत्नों के दीपक सोने की थाली, हम सब बजायें भक्ति से ताली।
बन जायें भगवान, आज थारी.....

7. दशों दिशा में दश धर्म चमके, नृत्यगान करलें सब जमके।
'आस्था' वरें शिवथान, आज थारी.....
दशलक्षण गुणखान, आज थारी आरती उतारूँ।

***

दशलक्षण विधान की आरती नं.2

(तर्ज-मन डोले...)

दीपक लायें, आरती गायें, दशलक्षण धर्म विधान की
हम करें सभी मिल आरतियाँ।

1. दशलक्षण ये पर्व हमारा, मोक्षमार्ग दिखलाता।
प्रभु मुद्रा अवलोकन करके, मन पुलकित हो जाता..2
दर्शन करते, वंदन करते, प्रभु आके तेरे द्वार पे.. हम करें..

2. प्रभु दर्शन से शक्ति मिलती, सुख-शांति मिल जाये।
अतिशय हो ऐसा जिनवर का, ज्ञान किरण मिल जाये..2
घुंघरू बाजे, छम-छम नाचे, हम लाये दीपक थाल ये.. हम करें..

3. दशलक्षण का व्रत विधान ये, पाप ताप विनशायें।
दश धर्मों को पालन करने, प्रभु की शरणा आये..2
'आस्था' आये, शिवसुख पाये, ये धर्म परम सुखकार है
हम करें सभी मिल आरतियाँ...

***

दशलक्षण चालीसा

दोहा- श्री जिनवर को नमन कर, पाँचों पद का ध्यान।
चौबीसों जिनराज का, करें यहाँ गुणगान।।
श्री गणधर जिन शारदा, मंगल धर्म महान्।
चालीसा दश धर्म का, हरता मिथ्या ज्ञान।।

चौपाई

जय-जय धर्म महासुखकारी, दशलक्षण ये मंगलकारी।
आओ इनकी महिमा गायें, मंगलमय चालीसा गायें।।1।।
पर्वराज शाश्वत कहलाये, जिसमें हर प्राणी लग जाये।
उसमें भद्रमास जब आये, सबके मन में खुशियाँ छायें।।2।।
भाद्रमास यह भद्र बनाये, सबको सच्ची राह दिखाये।
पापी भी पावन बन जाये, पाप छोड़ शुभ में लग जाये।।3।।
तीन बार इक वर्ष में आता, दश धर्मों की याद दिलाता।
उनमें भाद्रमास अति प्यारा, दशलक्षण व्रत का जयकारा।।4।।
इस महीने में व्रत बहु आते, यह व्रत भव से पार लगाते।
सबके मन उत्साह जगावे, उत्सव उपवासों का छावे।।5।।
निर्जल व्रत उपवास करे जो, पुण्यमयी सुख कोष भरे वो।
कोई एकाशन व्रत धारे, वो भी अपना भाग्य संवारे।।6।।
पूजा पाठ करे करवावे, मंत्र जापकर पुण्य कमावे।
राग-द्वेष क्रोधादिक छोड़ें, पापारंभों से मुख मोड़ें।।7।।
षट् आवश्यक निश दिन पाले, कहलाते वो भक्त निराले।
दश धर्मों को गुरुवर पालें, क्षमा धैर्य समता रस वालें।।8।।
तीव्र क्रोध को क्षमा बुझाये, क्षमावान गुरु को शिर नावें।
जिसने छोड़ी क्रोध कषायें, उसका जीवन पूज्य कहाये।।9।।
वो ही हमको धर्म सिखायें, पाप पंक से हमें बचायें।
आओ मान कषायें जाने, मार्दव धार मान को हाने।।10।।

मान कषाय बड़ी दुःखदायी, सम्यक् से मिथ्या में लायी।
मान छोड़ हम विनय सम्हारें, बन जायेंगे प्रभु हमारे।।11।।
माया ने पलटी सब काया, दुर्गतियों का पात्र बनाया।
आर्जव धर्म सरलता लाये, शौच धर्म मन में आ जाये।।12।।
मन वच काया पावन करले, श्री जिनवर पापों को हरले।
जिसने सत्य धर्म को जाना, पाया उत्तम सत्य खजाना।।13।।
संयम रत्न करे उजियारा, तप से चमके जीवन सारा।
त्याग बिना मुक्ति नहीं होती, त्याग धर्म है केवल ज्योति।।14।।
उत्तम आकिंचन व्रत प्यारा, जिसने मोह भाव परिहारा।
सर्व परिग्रह ग्रह सम लागे, उसको त्याग धर्म अनुरागे।।15।।
ऐसे गुरु की महिमा भारी, ब्रह्मचर्य व्रत के वो धारी।
इन्द्र नरेन्द्र भव्य सब ध्यावें, गुरुओं की वो भक्ति रचावें।।16।।
जो दश-दश उपवास करेगा, सर्व दुःखों से मुक्त रहेगा।
जो दशलक्षण व्रत अपनाये, संकट पीड़ा नहीं सताये।।17।।
दश धर्मों को जिसने जाना, पाया उसने मोक्ष खजाना।
कर्म काटके शिवसुख पाया, हमने उनको शीश झुकाया।।18।।
चालीसा जो भी नित गाये, चहुँगति से छुटकारा पाये।
क्षमा हृदय में उसके आये, क्षमावान वह श्रमण कहाये।।19।।
समिति गुप्तियाँ हम सब पायें, दश धर्मों पर 'आस्था' लायें।
भक्तों को दश धर्म उबारे, ये ही सबके तारण हारे।।20।।

दोहा- चालीसा दश धर्म का, पढ़े-सुने मन लाय।
दश धर्मों को साधकर, उच्च शिखर को पाय।।
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
करो कराओ भक्ति से, दीप धूप के साथ।।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः (9, 27, 108 बार जाप करें।)

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *